मार्च 2002
Rs. 10/-
चन्दामामा

अब हरेक

मैसूर सन्दल बेबी सोप के साथ
एक साबुनदान मुफ़्त!*

मैसूर सन्दल
बेबी सोप
प्राकृतिक चन्दन
और बादाम तेल युक्त

RECOMMENDED BY
SKIN & CHILD SPECIALISTS

आपके शिशु
की उतनी ही
देखभाल करता है,
जितनी आप करती हैं।

द हाउस ऑफ मैसूर सन्दल
८० वर्षों से भी अधिक समय से
चन्दन की सुगन्ध से आप के घरों
को सुवासित कर रहा है।

* स्टॉक समाप्त होने तक। इसलिए शीघ्र करें।

अधिक स्वच्छता और स्वास्थ्य के लिए, मैसूर सन्दल बेबी सोप की ओर मुड़े।

विशेष आकर्षण

सम्पुट - १०६ मार्च - २००२ सञ्चिका - ३

स्वार्थी १९

मेहनत का फल मीठा ५१

माया सरोवर-२ ११

विघ्नेश्वर ४५

अन्तरङ्गम्

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20
Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail : subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा
बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या
मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'
के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

किसान और पूर्वानुमान

कुछ अन्य देशों के समान भारत भी पिछले कुछ दिनों से हमलोगों को पूर्वानुमान में सहायता पहुँचाने के लिए मौसम उपग्रह छोड़ रहा है। ये पूर्वानुमान जनता तक रेडियो, टी.वी. और समाचार पत्रों के माध्यम से पहुँचाये जाते हैं। फिर भी, खेती के लिए वर्षा और धूप पर निर्भर रहनेवाले किसान पूर्वानुमान की परम्परागत पद्धतियों को पूरी तरह नहीं भूल पाये हैं।

हाल में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार सौराष्ट्र के एक गाँव के किसान ने एक पखवारा विशेष में वर्षा होने की भविष्यवाणी की थी जो सच निकली। इससे गुजरात कृषि विश्वविद्यालय के एक वैज्ञानिक को बड़ा आश्चर्य हुआ, जिसे किसान ने कुछ दिन पहले ही लिखा था। उसके लिए वर्षा के पूर्वानुमान के लिए किसानों द्वारा परम्परागत पद्धतियों के प्रयोग का यह पहला दृष्टान्त नहीं था।

देशी तकनीकी ज्ञान के ऐसे रहस्योद्‌घाटनों से प्रोत्साहित होकर इस वैज्ञानिक ने लगभग ४०० किसानों का एक संगठन बनाया है, जिसमें कुछ गुजरात से बाहर के भी हैं। इसका उद्देश्य विश्वविद्यालय द्वारा संचालित अनुसंधानों को नियमित रूप से पुनर्निवेशन उपलब्ध कराना है।

स्मरणीय है कि भारत में वराहमिहिर (आठवीं शताब्दी) और भाडली (बारहवीं शताब्दी) जैसे वैज्ञानिक हो गये हैं, जिन्होंने पूर्वानुमान करने के प्राणिशास्त्रीय सूचकों का अध्ययन किया था। उदाहरण के लिए, वराहमिहिर की बृहद् संहिता के अनुसार चमकीला पीला अमलतास, मौनसून आरम्भ होने के कुछ ४५ दिन पूर्व प्रचुर मात्रा में खिल जाता है। भाडली आसमान के बदलते हुए रंगों के आधार पर पूर्वानुमान करता था।

तेईस मार्च विश्व मौसम विज्ञान दिवस है। कभी भारत कितना समर्थ था और भूमि, समुद्र और अन्तरिक्ष में इसकी वर्तमान उपलब्धियाँ क्या हैं - इसे स्मरण करने का यह ठीक उपयुक्त अवसर है।

सम्पादक : *विश्वम*
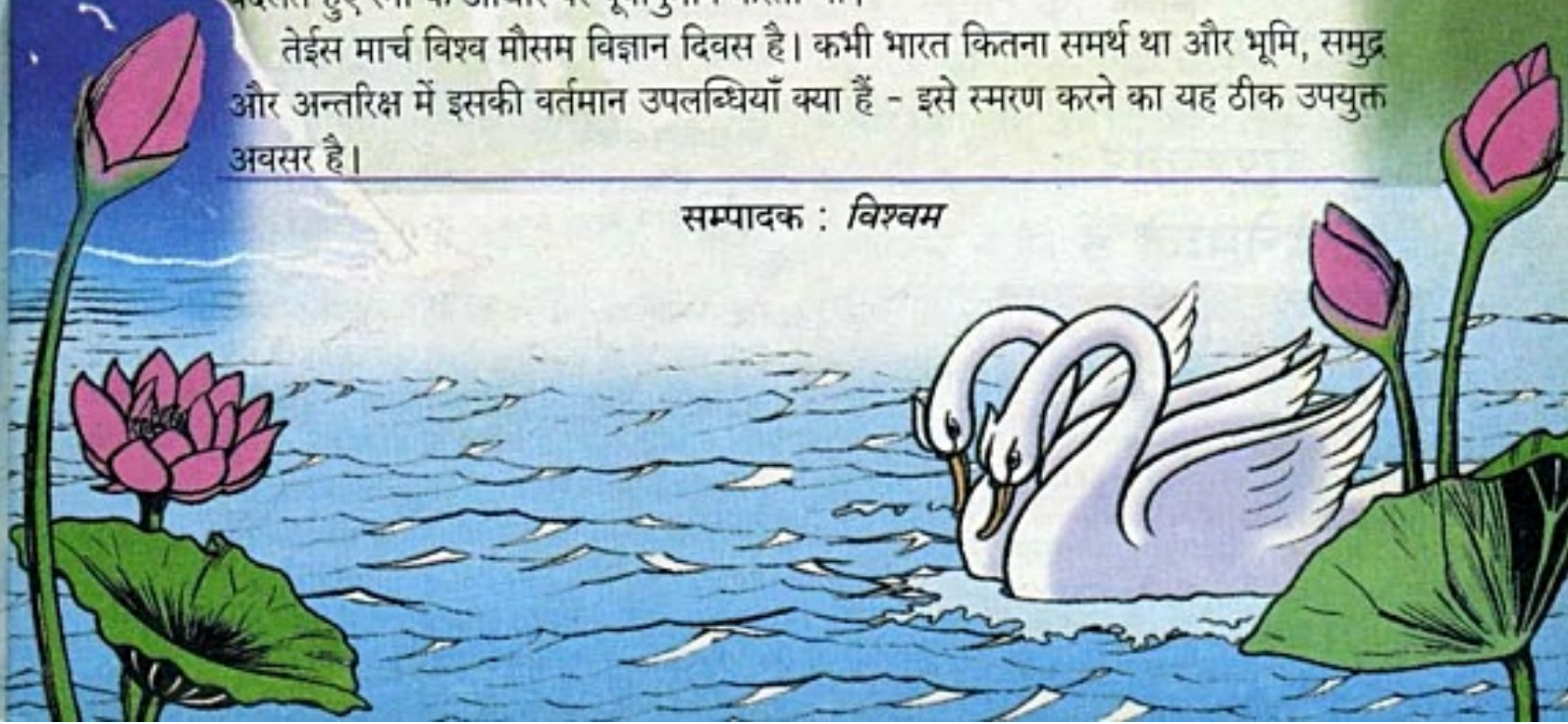
'हीरोज़ ऑफ इंडिया' प्रश्नोत्तरी में अपनी प्रविष्टि भेजें और आश्चर्यजनक पुरस्कार जीतें।

भारत के नायक - ६

आधुनिक भारत के भी अपने नायक हैं - क्रिया-कलाप के अनेक क्षेत्रों में। अपने आधुनिक नायकों पर यहाँ एक प्रश्नोत्तरी दी जा रही है।

तीन सर्वशुद्ध प्रविष्टियों पर पुरस्कार में साइकिलें दी जायेंगी।

1. यह मराठा राजा मुगलों से वीरतापूर्वक लड़ा। वह औरंगजेब द्वारा छल से पकड़ा गया। किन्तु वह बच निकला। कौन था वह?

---

2. वह १५ जनवरी १९४९ को आमी स्टाफ के चीफ़ और भारतीय सेना के कमांडर-इन-चीफ़ पद पर आसीन होनेवाला प्रथम भारतीय था। कौन था वह?

---

3. इस चोला राजा ने बंगाल के राजा महीपाल को हराया। उसने गंगा नदी का पानी अपनी राजधानी गंगैईकोंडा चोलापुरम तक लाया। जानते हो वह कौन था?

---

4. वह भारतीय सेना का प्रथम फिल्ड मार्शल था। क्या तुम जानते हो उसे?

---

5. उसने मैसूर की पहली लड़ाई जीती। उसका बेटा उसी के समान यशस्वी हुआ। वह नायक कौन है?

प्रत्येक प्रश्न के नीचे दिये गये स्थान को स्पष्ट अक्षरों में भरें। इन पाँचों में से आपका प्रिय आदर्श नायक कौन है? और क्यों? दस शब्दों में पूरा करें

मेरा प्रिय आधुनिक नायक .... है,

क्योंकि ....

प्रतियोगी का नाम: ....

उम्र: .... कक्षा: ....

पूरा पता: ....

....

पिन: .... फोन: ....

प्रतियोगी के हस्ताक्षर: ....

अभिभावक के हस्ताक्षर: ....

इस पृष्ठ को काटकर निम्नलिखित पते पर ५ मार्च से पूर्व भेज दें-

हीरोज़ ऑफ इंडिया प्रश्नोत्तरी-६
चन्दामामा इन्डिया लि.
नं.८२, डिफेंस ऑफिसर्स कॉलोनी
ईक्काडुथांगल, चेन्नई-६०० ०९७.

निर्देश :-

१. यह प्रतियोगिता ८ से १४ वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए है।
२. सभी भाषाओं के संस्करणों से इस प्रतियोगिता के लिए तीन विजेता चुने जायेंगे। विजेताओं को समुचित आकार की साइकिल दी जायेगी। यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टियाँ अधिक हुईं तो विजेता का चुनाव 'मेरा प्रिय नायक' के सर्वश्रेष्ठ विवरण पर किया जायेगा।
३. निर्णायकों का निर्णय अंतिम होगा।
४. इस संबंध में कोई पत्राचार नहीं किया जायेगा।
५. विजेताओं को डाक द्वारा सूचित किया जायेगा।

पुरस्कार देनेवाले हैं

राक्षस का पुण्य कार्य

दुष्काम निधि को खोजते हुए दंडकारण्य पहुँचा। एक राक्षस ने उसे वहाँ क़ैद कर लिया। वह भय के मारे थर-थर काँपने लगा।

राक्षस ने उसे धैर्य दिलाते हुए और समझाते-बुझाते हुए अपनी कहानी सुनायी। "मैं लंबे अर्से से मानवों और जंतुओं को खाता आ रहा हूँ और निकृष्ट जीवन जी रहा हूँ। एक दिन एक ऋषिवर से मेरी भेंट हुई। उन्हें मैंने अपना दुखड़ा सुनाया। उनसे मैंने सविनय प्रार्थना की कि मुझे इस राक्षस जन्म से मुक्ति दिलाइये और मनुष्य जन्म प्रदान कीजिए। ऋषिवर ने मेरी प्रार्थना सुनी और आश्वासन दिया कि मैं अगर कोई पुण्य कार्य करूँगा तो यह संभव हो सकता है और मैं मानव जन्म लेने के योग्य हो सकता हूँ।"

अपनी कहानी सुनाने के बाद राक्षस ने दुष्काम से कहा, "तुम्हें देखकर मुझे लगता है कि पुण्य कार्य करने का समय आसन्न आ गया। मेरी शक्ति अमोघ है। बोलो, तुम्हें क्या चाहिए!"

दुष्काम को लगा कि अब उसे अवश्य ही निधि प्राप्त हो जायेगी। उसने राक्षस से जानना चाहा कि वह निधि कहाँ है।

"सच बताओ, निधि से तुम्हें क्या लेना-देना है? अगर तुमने झूठ कहा तो मुझसे दिखायी जानेवाली निधि भी तुम्हें दिखायी नहीं पड़ेगी।" राक्षस ने कहा।

दुष्काम ने कहा, "निधि के प्राप्त होने पर मैं संपन्न बनूँगा। उस धन से शक्तिशाली मल्ल योद्धाओं का पालन-पोषण करूँगा। जो भी मेरा विरोध करेंगे, मेरी बात को मानने से इन्कार करेंगे, उन्हें पिटवाऊँगा और नीचा दिखाऊँगा। जिस विशालाक्षी से मैंने प्रेम किया है, उससे विवाह रचाऊँगा।"

"इतनी सी छोटी बात के लिए धन की क्या आवश्यकता है? मल्ल योद्धाओं की क्या ज़रूरत है? जिस विशालाक्षी से तुमने प्यार किया, उसे मीठी बातों से मना लूँगा। तुमसे शादी करने के

- महेश गुप्ता -

लिए उसे राजी करूँगा।'' राक्षस ने कहा।

''परंतु विशालाक्षी उस आदमी से शादी करने के लिए नहीं मानेगी, जिसकी शादी पहले ही हो चुकी हो। वह मेरी दूसरी पत्नी बनने के लिए कदापि नहीं मानेगी।'' दुष्काम ने कहा।

उसके इस उत्तर पर राक्षस ने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा, ''तब तुम्हारी पहली पत्नी का क्या हुआ? वह अब कहाँ है?''

राक्षस के इस प्रश्न ने दुष्काम को उधेड़ बुन में डाल दिया। उसने सकपकाते हुए कहा, ''ग्रामदेवी पर मैंने उसकी बलि चढ़ा दी। एक मांत्रिक ने कहा था कि ऐसा करने पर मेरे घर में धन की वर्षा होगी। पर धन की वर्षा नहीं हुई। सिपाहियों को जब इसका पता चला तब वे मेरे पीछे पड़ गये। उनसे छुटकारा पाने के लिए भी मुझे धन चाहिये। विशालाक्षी को पाने के लिए भी धन चाहिये। इसीलिए मुझे वह निधि दिखाओ।''

''मनुष्य को पुनर्जन्म देने की शक्ति मुझमें है। तुम्हारी पत्नी को पुनर्जन्म दे दूँगा। तुम्हारी सारी परेशानियाँ दूर हो जायेंगी। मैंने ठीक कहा न? क्या ऐसा कर दूँ?'' राक्षस ने कहा।

''मेरी पत्नी यदि जीवित हो जाए तो विशालाक्षी से मैं विवाह नहीं कर पाऊँगा।'' दुष्काम ने कहा।

''अरे दुष्ट, तुम मानव नहीं हो। मुझ जैसे राक्षस से भी गये गुजरे हो, अधम हो, पापी और नीच हो। तुम्हें अच्छा आदमी बनाने की भरसक कोशिश मैंने की। अच्छे मानव की सहायता करना ही पुण्य कार्य कहलाता है। अब स्पष्ट हो गया कि आज भी मैं यह पुण्य कार्य नहीं कर पाऊँगा। एक और दिन की प्रतिज्ञा करते हुए आज तुम्हें निगल जाऊँगा और भूख मिटा लूँगा।'' यह कहते हुए उसने दुष्काम को मुँह में डाल लिया।

दूसरे ही क्षण वही ऋषिवर प्रत्यक्ष हुए और बोले, ''दुष्काम जैसे नीच को निगलकर तुमने पुण्य कार्य किया है। इसी प्रकार अनजाने में ही तुमने कितने ही और पुण्य कार्य किये हैं। लेकिन आज तुमने जो किया, वह सबसे उत्तम पुण्य कार्य है। अब तुम्हें राक्षस जन्म से मुक्ति मिल गयी। शीघ्र ही तुम मानव जन्म लोगे। धन्य हो।'' यह कहकर ऋषि अदृश्य हो गये।

कुत्तों का सम्मान

एक दिन एक कुत्ते ने राजा को काट लिया। पिछली रात राजा बहुरूपिया बनकर नगर में घूम रहे थे। तभी यह दुर्घटना हुई।

उनकी घनी मूँछें थीं, वे सिर पर बड़ी पगडी पहने हुए थे। मस्तक पर बड़ा तिलक था। गली से गुज़रते हुए बहुरूपिया राजा को देखकर कुत्ते को लगा कि यह कोई बड़ा चोर है। बस, कुत्ते ने उनपर धावा बोल दिया और उन्हें काट लिया। राजा अपने को उससे बचाते हुए राजभवन पहुँचे।

तुरंत वैद्य बुलाये गये और आवश्यक चिकित्सा करवायी गयी। अब ख़तरा टल गया।

सेनाध्यक्ष को जब सबेरे-सबेरे इसकी जानकारी हुई, तब वे दौड़े-दौड़े आये। वे भय के मारे थरथर काँपने लगे। उदास मुँह लिये वे राजा के सामने हाथ जोड़कर खड़े हो गये। उन्होंने बड़े ही बिनय के साथ कहा, ''क्षमा कीजिए महाराज। गलियों में मटरगश्ती करनेवाले कुत्तों को मार डालने का आदेश मैं सैनिकों को दे चुका हूँ। पर ग़लती हो गयी। अब मैं अभी से यह काम स्वयं संभालूँगा। आगे से गली का कोई भी कुत्ता ज़िन्दा नहीं रहेगा।''

राजा इस पर हँस पड़े और बोले, ''तुममें भुजबल तो है, पर बुद्धिबल का अभाव है। एक कुत्ते ने मुझे काट लिया पर इसका यह मतलब नहीं कि सभी कुत्ते मार डाले जाएँ। मुझे काटकर कुत्ते ने कोई अपराध नहीं किया। मेरे वेष को देखकर उसने मुझे चोर समझ लिया और काट लिया। सच कहा जाए तो चोरों को पकड़ना भी सैनिकों का ही काम है। जो काम सैनिक नहीं कर पाये, वह काम कुत्ते ने कर दिखाया। इसका यह मतलब हुआ कि हमारे राज्य में सैनिकों के काम भी कुत्ते ही संभाल रहे है। सैनिकों से अधिक वे कर्तव्य निभा रहे हैं। इस स्थिति में हमें चाहिए कि हम उन कुत्तों का सम्मान करें। ऐसा न करके उन्हें सज़ा देना कदापि उचित नहीं।''

सेनाध्यक्ष ने अपमान के मारे सिर झुका लिया। वे वहाँ से चले गये। फिर उन्होंने ऐसी व्यवस्था की, जिससे कोई भी कुत्ता तब से गली में घूमता हुआ दिखायी नहीं पड़ा। *- कुमारी कुंतला*

आपके लिए प्रश्नोत्तरी

सिमलीपाल

यदि आप शिकार पर जाने की योजना बना रहे हैं जहाँ एक ही क्षेत्र में लगभग १०० बाघों को देख सकें तब सिमलीपाल का राष्ट्रीय पार्क ही वह स्थान है। प्रोजेक्ट टाइगर के अन्तर्गत आनेवाले राष्ट्रीय पार्कों में एक, उड़ीसा के मयूरभंज जिले में सिमलीपाल पार्क का कुल क्षेत्रफल २७५० वर्ग कि.मी. है - आँखों के लिए एक बहुत बड़ी दावत !

सिमलीपाल के बृहत् क्षेत्र में मिश्रित भूदृश्य हैं और पर्णावली का विशाल सिलसिला है। पार्क से होकर बारह नदियाँ बहती हैं। पार्क इतना विशाल है कि इस क्षेत्र में एक स्थान की जलवायु भी दूसरे स्थान से भिन्न है। इन विशेषताओं के कारण सिमलीपाल अनेक प्रकार की वनस्पतियों और जीवजन्तुओं के लिए एक आदर्श प्रजनन क्षेत्र है।

वन्य जीवन के प्रेमी यहाँ अत्यधिक संख्या में तेन्दुआ, हाथी, घड़ियाल तथा अनेकानेक रेंगनेवाले जन्तुओं को देखकर रोमांचित हो जायेंगे। क्या विहंग-अवलोकन के लिए कुछ है? सिमलीपाल वस्तुतः पक्षियों की लगभग २३० जातियाँ प्रस्तुत करता है। अतः अपनी वे दूरबीनें निकालिये और चल पड़िये।

ये न समझें कि प्रकृति-प्रेमियों के लिए यहाँ कुछ नहीं है। पार्क के पर्वतों, घाटियों और जलप्रपातों के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर किसी की भी सांस रुक जायेगी। बरही पानी का जलप्रपात, जोरान्दा तथा अन्दर में चाहला और नवाना कुछ ऐसे स्थान हैं जहाँ सैलानियों के लिए आवास स्थल सुलभ हैं।

आपके लिए प्रश्नोत्तरी !

१४ वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए।

प्रतियोगिता - VII

१. भारत में कितने बाघ प्रारक्षण (टाइगर रिजर्वस) हैं?

....

२. सिमलीपाल राष्ट्रीय पार्क में एक घड़ियाल प्रजनन-केन्द्र है। यह कहाँ पर स्थित है?

....

३. जहाँ महानदी पूर्वी घाट को काटती हुई गुजरती है, वहाँ पर उड़ीसा के अन्तर्गत कौनसा अभयारण्य (सैंकच्यूरी) है?

....

अपने उत्तर स्पष्ट अक्षरों में रिक्त स्थानों में लिखें, और नीचे लिखे कूपन को भरकर निम्न लिखित पते पर भेज दें :

Orissa Tourism Quiz Contest
Chandamama India Limited
No.82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097

Name : ....

Age : ....

Address: ....

....

Pin.................. Phone ....

Winners picked by Orissa Tourism in each contest will be eligible for **3 days, 2-night** stay at any of the **OTDC Panthanivas**, upto a maximum of four members of a family. Only original forms will be entertained. The competition is not open to CIL and Orissa Tourism family members. Orissa Tourism, Paryatan Bhaven, Bhubaneswar - 751 014. Ph: (0674) 432177, Fax : (0674) 430887, e-mail : ortour@sancharnet.in. Website : Orissa-tourism.com

माया सरोवर

2

(जयशील सोया हुआ था। आधी रात को उसे किसी का आर्तनाद सुनायी पड़ा तो वह जाग उठा। श्मशान में एक विचित्र आकारवाले के सिर को उसने धड़ से अलग कर दिया। फिर पास ही के एक घर में गया। उस घर की मालकिन एक बूढ़ी औरत थी। जब वह उस बूढ़ी से बातें कर रहा था तब हिरण्य नगर का रक्षक दो आदमियों के साथ वहाँ आया और दरवाजा खटखटाने लगा। इसके बाद-)

बूढ़ी दरवाज़े के पास आयी। वह वहाँ रुक गयी और उसने जयशील से पूछा ''बेटे, तुमने क्या कोई अपराध किया? कहीं सिपाहियों से बचने के उद्देश्य से यहाँ पनाह लेने तो नहीं आये?''

''माँजी, मैंने कोई ऐसा अपराध नहीं किया। जीविका के लिए, अपना पेट भरने के लिए इधर-उधर भटक रहा हूँ। नौकरी की खोज में हूँ।'' जयशील ने कहा।

बूढ़ी ने उसकी बातों का विश्वास किया। जब उसे तसल्ली हुई तब उसने दरवाजा खोला।

नगर रक्षक ने द्वार पर ही रुककर पूछा, ''बुढ़िया! श्मशान के रखवाले के बेटे और एक सिद्ध साधक के बीच झगड़ा हो गया। उसी झगड़े के निपटारे के लिए मुझे यहाँ आना पड़ा। क्या तुम्हारे घर में कोई युवक घुस आया है, जिसकी कमर में तलवार लटक रही है?''

जयशील तुरंत वहाँ आ गया। उसे देखते ही श्मशान के रखवाले का बेटा चिल्ला पड़ा। ''महोदय, इसी ने मेरे पिता का सिर काट डाला था''।

सिद्ध साधक ने उसपर नाराज़ होते हुए कहा, ''अरे बेवकूफ़, अपने पिता को मरा क्यों कहते हो? वह तो जीवित है। मरा आदमी क्या कभी जिन्दा

था तब मैंने तुम्हें उनका सर काटते हुए अपनी आँखों देखा था।'' श्मशान के रखवाले के बेटे ने कटु स्वर में बताया।

''अरे छोकरे, मैंने यह भी नहीं देखा कि वह शव किसका है। मैंने अपनी मंत्रशक्ति से उसमें काल का आवाहन किया। तब जाकर शव में प्राण भर आया। काल का मैं मुक़ाबला नहीं कर सका और भाग जाने लगा, तब इस वीर युवक ने काल का सिर धड़ से अलग कर दिया और मेरी रक्षा की।'' सिद्ध साधक ने तैश में आकर कहा।

नगर रक्षक ने मुस्कुराते हुए जयशील से कहा, ''तुमने अपना नाम जयशील बताया था न? ये दोनों चार-पाँच घंटों से इसी बात को लेकर व्यर्थ लड़ झगड़ रहे हैं। मेरा दिमाग़ चाटते जा रहे हैं। इनकी समझ में अब तक नहीं आया कि वह कौन है, जिसका सिर तुमने काट डाला। मुझे लगता है कि इसमें कोई रहस्य छिपा हुआ है। मंत्री ही इसका फ़ैसला कर पायेंगे। चलो, तुम तीनों मेरे साथ चलो।'' फिर वह तीनों के साथ निकल पड़ा।

जब वे राजभवन के समीप पहुँच रहे थे तभी मंत्री भी राजभवन में प्रवेश कर रहा था। नगर रक्षक ने उन्हें सब बातें सविस्तार बतायीं।

ध्यान से पूरा विवरण सुनने के बाद मंत्री ने थोड़ी देर तक सोचकर कहा, ''वैद्य व रिश्तेदारों को इसका पक्का विश्वास हो गया कि श्मशान का रखवाला मर गया। फिर उसका जीवित होना असंभव है। सिद्ध साधक के कहे अनुसार उसके शरीर में किसी काल ने प्रवेश किया होगा। जो भी हो, वह जीवित हो गया और चलने-फिरने लगा। ऐसे एक प्राणी का सिर इस युवक ने काट डाला।

हो सकता है? इस युवक ने अपनी अद्भुत तलवार से जिसे मार डाला, वह तुम्हारा पिता नहीं बल्कि वह काल है, जो तुम्हारे पिता पर हावी था। यह रहस्य मैंने उसी के मुहँ से सुना है।''

नगररक्षक ने उन दोनों को डांटा और जयशील की ओर मुड़कर कुछ कहने ही वाला था कि इतने में जयशील उससे कहने लगा, ''महाशय, मेरा नाम जयशील है। अमरावती नगर का वासी हूँ। श्मशान में एक विकृत आकारवाला मुझपर टूट पड़ने ही वाला था कि मैंने अपनी रक्षा के लिए उसका सिर काट दिया और यह मुझे मजबूर होकर करना पड़ा।''

''तुमने काल का नहीं, मेरे पिता का सिर काट डाला। जब मुझे मालूम हुआ कि वे प्रातःकाल मार डाल दिये गये, तब मैं उन्हें श्मशान ले आया। लकड़ियाँ लाने जब बाहर गया था तब किसी देवता की दया से वे जीवित हो गये। जब मैं लौट रहा

इसका मतलब यह हुआ कि यह युवक हत्यारा है, परंतु...'' यह कहते हुए वह रुक गया।

इस 'परंतु' का फ़ायदा उठाते हुए जयशील ने कहा, ''महोदय, अपनी रक्षा के उद्देश्य से शत्रु को मार डालना अपराध कैसे कहा जा सकता है?''

''हाँ, हाँ, तुमने जो दलील पेश की, वह भी सही लगती है।'' मंत्री ने कहा। उसे लगा, मानों उसके सिर से भार उतर गया हो।

फिर उन्हें वहीं ठहर जाने के लिए कहा और राजा से मिलने वहाँ से अकेला निकल पड़ा। उस समय कनकाक्ष राजा से सेनाध्यक्ष का बेटा मंगल वर्मा बात कर रहा था। मंत्री को देखते ही राजा ने कहा, ''महामंत्री, मंगलवर्मा युवराज व युवरानी का पता लगाने की अनुमति माँग रहा है। आपकी क्या सलाह है?''

''महाराज, जयशील नामक एक युवक से मैं मिला, जो बहुत ही पराक्रमी और साहसी है। अद्‌भुत व अलौकिक शक्तियों का भंडार भी है वह। मुझे यह भी मालूम हुआ कि उसकी तलवार अमोध शक्तियों से भरी है।'' मंत्री ने कहा।

मंत्री की बातें सुनकर कनकाक्ष सोच में पड़ गया। मंगलवर्मा मन ही मन मंत्री पर बहुत नाराज़ होता रहा। वह अपनी नाराज़गी पर काबू नहीं रख सका और कटु स्वर में बोल पड़ा, ''क्या जयशील नामक वह युवक कुलीन वंश का है? महाराज ने घोषणा की है कि जो युवराज व युवरानी को ढूँढ निकालेंगे, उन्हें आधा राज्य दिया जायेगा। क्या वह इसके योग्य है?''

इस असंगत प्रश्न पर चिढ़ते हुए मंत्री ने कहा, ''हमें अब तक यह मालूम नहीं हो पाया कि जिन्होंने

युवराज व युवरानी का अपहरण किया, वे मानव हैं या दानव या देवता। ऐसी विषम परिस्थिति में उन्हें जो ढूँढ़कर ले आने की शक्ति रखता है, वह अवश्य ही शक्तिशाली, पराक्रमी व सुयोग्य होगा। ऐसे शूर-वीर को आधा राज्य देना अवश्य ही समुचित है। वह इसके योग्य है।''

''कैसे हम विश्वास करें कि उसकी तलवार की शक्ति अमोघ व अद्‌भुत है। वह तलवार मुझे एक बार दिलाइये। मैं उसकी परीक्षा करूँगा।'' मंगलवर्मा ने कहा।

कनकाक्ष राजा ने उसकी माँग का समर्थन करते हुए कहा, ''मंत्रिवर, जयशील की तलवार की परीक्षा करने का मौक़ा मंगलवर्मा को दिया जाए। अगर सचमुच ही वह तलवार शक्तिपूर्ण साबित हुई तो उस युवक को भेंट देंगे और अपने ही आस्थान में नौकरी की भी व्यवस्था करेंगे।''

''परीक्षा किस प्रकार हो महाराज?'' मंत्री ने पूछा।

''हमारी मृगशाला के अधिकारियों को आदेश दीजिए कि पिंजड़ों में बंद दो बड़े-बड़े बाघों को ले आयें। अमोघ अनोखी शक्तिशाली इस तलवार को हाथ में लिए पिंजड़ों से बाहर आये बाघों का सामना मंगलवर्मा करेगा।'' कनकाक्ष राजा ने कहा।

मंत्री के कहते ही जयशील ने सहर्ष अपनी तलवार मंगलवर्मा को सौंप दी। देखते-देखते पिंजड़ों में बंद बाघ लाये गये। वे बीच मैदान में रखे गये, जिसके चारों ओर ऊँची-ऊँची दीवारें थीं। मृगशाला के अधिकारी ने मंगलवर्मा को सावधान किया और ऊपर से पिंजड़ों के दरवाज़ों को खोल दिया। राजा, मंत्री व जयशील ऊपर बैठकर ध्यान से यह घटना देख रहे थे। दोनों बाघ ज़ोर-ज़ोर से गरजने लगे और मंगलवर्मा की तरफ़ बढ़े चले आने लगे। सेनाध्यक्ष का बेटा मंगलवर्मा खड्ग युद्ध व धनुर्विद्या में प्रवीण था। पर जब उसने देखा कि दोनों बाघ मुँह खोले उसी की तरफ़ गरजते हुए बढ़े चले आ रहे हैं तो वह डर के मारे काँपने लगा।

ऊपर से यह दृश्य देखते हुए जयशील को लगा कि कम से कम अपने प्राण की रक्षा के लिए ही सही, मंगलवर्मा तलवार को उपयोग में ले आयेगा। पर भयभीत मंगलवर्मा चुपचाप खड़ा था और थरथर काँप रहा था। उसे प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से जयशील ने चिल्लाते हुए कहा, ''मंगलवर्मा, तुम्हारे हाथ में जो तलवार है, वह अमोघ शक्तियों से भरपूर है। डरो मत। उस तलवार से उनपर वार करो।''

दूसरे ही क्षण एक बाघ मंगलवर्मा पर टूट पड़ा और अपने पंजे से उसके कंधे को घायल कर दिया। मंगलवर्मा को लगा कि अब उसकी मौत निश्चित है तो उसने साहस बटोरकर तलवार बाघ की छाती में चुभोने की कोशिश की। किन्तु थरथर काँपते हुए उसके हाथों से तलवार ज़मीन पर गिर गयी।

सिद्ध साधक ने ख़तरे को भाँप लिया और ज़ोर से चिल्ला पड़ा, ''वीर युवक जयशील।''

जयशील तालियाँ बजाता हुआ दस फुट की ऊँचाई से बिजली की तरह बाघों के सामने कूद पड़ा और ज़मीन पर पड़ी तलवार को अपने हाथ में उठा लिया।

कनकाक्ष राजा ने जयशील के साहस पर आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, ''वाह, इतना साहस! ऐसे युवक की सहायता हो तो अवश्य

ही हम युवराज व युवरानी को ढूँढ़ निकालने में सफल होंगे।''

इस बीच जयशील ने धरती को अपने पैरों से रौंदा और जान-बूझकर चार क़दम पीछे गया। एक बाघ ने उस पर हमला बोल दिया। मौक़ा पाकर जयशील ने एक क़दम आगे बढ़ाया और बाघ की छाती में तलवार भोंक दी।

बाघ ज़मीन पर गिरकर छटपटाने लगा। अपने साथी बाघ की इस असहाय स्थिति से भयभीत दूसरा बाघ पीछे-पीछे जाता रहा और खुले पिंजड़े के अंदर बाण की तरह जा गिरा। ऊपर से कनकाक्ष राजा के साथ-साथ सबने हर्षध्वनियाँ कीं।

तब जाकर मंगलवर्मा की आँखें खुलीं। उसने मरे बाघ को व पिंजड़े में पड़े बाघ को देखकर ठंडी सांस ली और सिर उठाकर उसने राजा कनकाक्ष से कहा, ''महाराज, निस्संदेह इस तलवार की शक्ति अमोघ है, अद्भुत है। दुर्भाग्यवश वह मेरे हाथ से फिसल गयी। इस कारण उसकी शक्ति का निर्णय मैं नहीं कर पाया। और जयशील ने यह काम कर दिखाया।''

''तुमने सही बताया मंगलवर्मा। भाग्यवश तुम बाल-बाल बच गये।'' कहते हुए मंत्री धर्ममित्र मुस्कुरा पड़ा।

''मैं पहले ही आपसे कह चुका। स्वयं कालने इस तलवार को आशीर्वाद दिया। मेरी भी सहायता इसके साथ जुड़ जाए तो जयशील विश्व विजयी होगा।'' सिद्ध साधक ने कहा।

''पर इतनी अद्भुत शक्तिशाली तलवार के होते हुए भी मंगलवर्मा कुछ न कर सका।'' राजा कनकाक्ष ने अपना संदेह व्यक्त किया।

मंत्री धर्ममित्र ने झुककर ऊपर से जयशील से कहा, ''जयशील, अब ऊपर आ जा। तुम्हारे धैर्य-साहस पर हम बहुत खुश हैं। तुमने हमारे

सेनाध्यक्ष के बेटे के प्राण की भी रक्षा की। इसके लिए तुम्हें हमारे हार्दिक धन्यवाद।''

जयशील ने कहा, ''महाशय, जिस पिंजड़े में बाघ बैठा हुआ है, पहले उसके दरवाज़े बंद करवाइये। मैं अगर ऊपर आ गया तो यहाँ मंगलवर्मा निरायुध अकेला रह जायेगा। व्यर्थ आफ़त क्यों मोल लें।''

इस पर सिद्धसाधक ने ज़ोर से हँसते हुए कहा, ''मंगलवर्मा के हाथ में हथियार भी हो तो क्या फ़ायदा। इंद्रायुध भी ऐसे युवक के हाथ में निरर्थक साबित होगा।''

मंत्री ने हाथ फैलाया और जयशील उसे पकड़कर ऊपर आ गया। उसके ऊपर पहुँचते ही सिद्ध साधक ने उसे गले लगाते हुए कहा, ''तुम साहसी हो। भय भी तुम जैसे निर्भीक को देखकर दुम दबाकर भाग जाता है। काल को अपने वश में करने के लिए मुझे तुम्हारी सहायता की ज़रूरत पड़ेगी। साथ ही युवराज व युवरानी को ले आने का सामर्थ्य केवल तुम्हीं में है। इससे महाराज की समस्या हल हो जायेगी और वे इस चिंता से मुक्त हो जायेंगे।''

फिर वे सबके सब नीचे उतरे और राजा के साथ राजभवन में प्रवेश किया। इतने में द्वार के पास खड़ा पहरेदार का बेटा ज़ोर से चिल्लाते हुए कहने लगा, ''महाप्रभु, मरकर मेरे पिता फिर से ज़िन्दा हो गये। फिर भी जिसने मेरे पिता को मार डाला, उससे मुझे मुआवजा दिलाइये।''

मंत्री धर्ममित्र ने मुड़कर उसे देखा और आश्वासन देते हुए कहा, ''अपने पिता के मर जाने पर फ़िक्र मत करना। आगे से तुम ही नगर के सभी श्मशानों के पर्यवेक्षक हो। अब तुम्हें जो वेतन मिलता है, आगे से उससे दस गुना अधिक वेतन मिलेगा। ज़्यादा शोर मत मचाओ और यहाँ से चले जाओ।''

''प्रभु, जब तक ज़िन्दा रहूँगा तब तक आपका उपकार नहीं भूलूँगा। एक तरफ़ पिता के मरने पर दुखी तो था ही परन्तु उनके ज़िन्दा लौटने के बाद फिर मर जाने पर और दुखी होगया हूँ। अगर वे ज़िन्दा होते तो मेरी पदोन्नति पर बहुत खुश होते,'' कहता हुआ, आँसू पोंछता हुआ वहाँ से चला गया। उसके चले जाने के बाद राजा, मंत्री, जयशील व सिद्धसाधक सभा भवन में पहुँचे।

कनकाक्ष राजा सिंहासन पर आसीन होकर सोच में पड़ गया। थोड़ी देर बाद उसने मंत्री से कहा, ''महामंत्री, अब हम क्या करें? युवराज व

युवरानी को ढूँढने के प्रयत्नों में हमारे सभी लोग विफल हो गये। ऐसी परिस्थिति में इसका दायित्व साहसी व शक्तिशाली जयशील को सौंपा जाए तो क्या ठीक होगा?''

मंत्री जयशील को देखते हुए कुछ बताने ही जा रहा था कि इतने में आवेश-भरे स्वर में सिद्धसाधक ने कहा, ''उत्तम होगा महाराज। आपके बच्चों को ले आने के लिए केवल साहस व शक्ति ही पर्याप्त नहीं हैं। इनके साथ अलौकिक ज्ञान का होना भी नितांत आवश्यक है। अतः जयशील के साथ-साथ जाने के लिए मुझे भी अनुमति दीजिए।''

जयशील को सिद्धसाधक का यह प्रस्ताव अच्छा नहीं लगा। इसलिए उसने सविनय कहा, ''महाराज, मेरी एक विनती है।''

''हाँ, हाँ, निर्भीक होकर बताना। हम भी तुम्हारी राय सुनने के लिए उतावले हैं।'' महाराज ने कहा।

''महाराज, अपना देश छोड़कर नौकरी की खोज में यहाँ आया हूँ। मुझे कोई नौकरी दी जाए तो बहुत अच्छा होगा। आपका सदा आभारी रहूँगा।'' जयशील ने कहा।

कनकाक्ष राजा ने मंत्री की तरफ़ देखा। तब मंत्री ने जयशील से कहा, ''जयशील, महाराज अपने आस्थान में तुम्हें अवश्य नौकरी देंगे। तुम अब से उनके सेवकों में से एक हो। राजा की आज्ञा का पालन करना सेवक का प्रथम कर्तव्य है।''

''निस्संदेह। मैं अपना कर्तव्य निभाने के लिए सन्नद्ध हूँ। महाराज जो भी आज्ञा देंगे, उसका पालन करूँगा।'' जयशील ने सविनय कहा।

मंत्री धर्ममित्र ने उसके उत्तर से खुश होकर कहा, ''जयशील, महाराज की आज्ञा है कि तुम युवराज व युवरानी को ढूँढकर ले आओ और यथाशीघ्र इस काम पर लग जाओ।''

इतने में राजा का एक सेवक वहाँ आया और मोती का एक हार व टूटी तलवार दिखाते हुए कहने लगा, ''महाराज, जिस पेड़ के पास युवराज और युवरानी ग़ायब हो गये, वहाँ एक भील को ये चीज़ें मिलीं। उसकी मानसिक स्थिति डावांडोल है। और वह पागल जैसा बरताव कर रहा है।''

(सशेष)
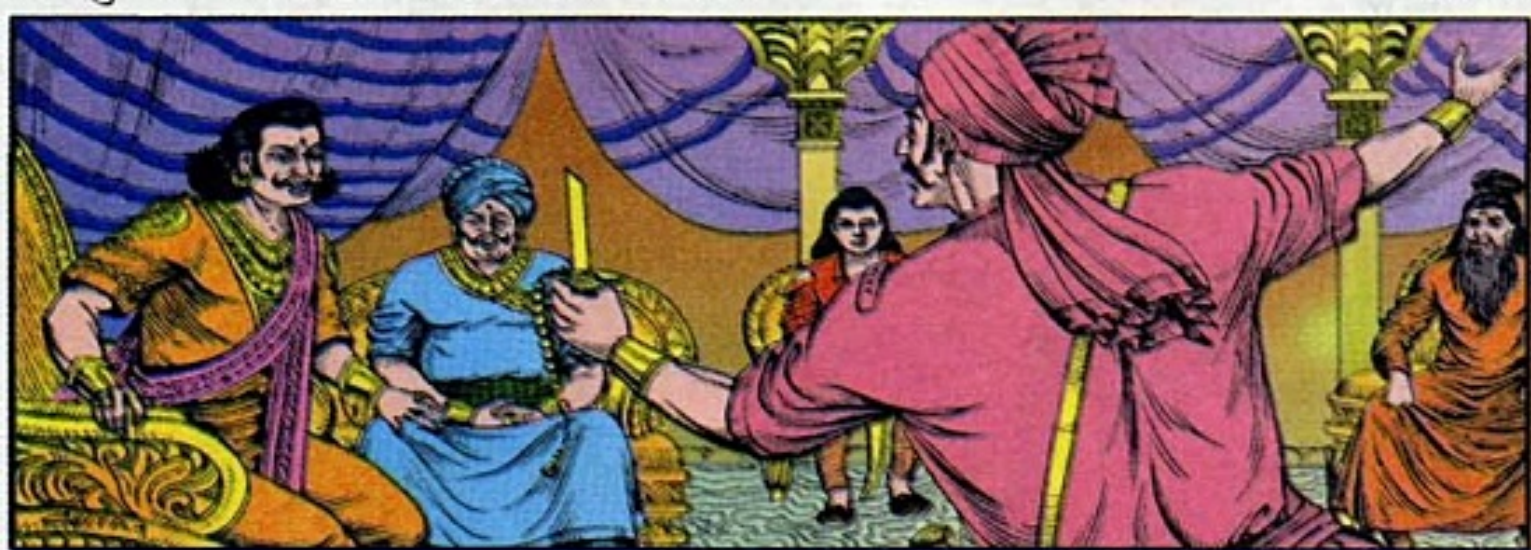
संन्यास का चस्का

रामनारायण अपनी पत्नी तथा दो बच्चों के साथ सुखी था। मगर अचानक उसके मन में संन्यासी बन जाने की इच्छा पैदा हुई। पत्नी ने अनेक प्रकार से समझाया कि उन्हें छोड़कर वे न जायें, पर रामनारायण ने उसकी एक न सुनी।

"संन्यास लेने की योग्यता सब में नहीं होती; तुम्हारे बच्चे भी बहुत छोटे हैं। इसलिए संन्यास मत लो।" कई लोगों ने समझाया, फिर भी रामनारायण ने अपना हठ न छोड़ा।

एक दिन सबेरे रामनारायण घर से चलने को तैयार हुआ, तब उसकी पत्नी ने कहा, "रास्ते में भूख लगेगी, थोड़ा-सा बासी भात बांध देती हूँ, लेते जाओ।"

रामनारायण भात लेकर चल पड़ा। भूख लगी तो एक पेड की छाया में बैठकर खाने की पोटली खोली तो देखता क्या है, उस में भूसा भरा है ! रामनारायण को अपनी पत्नी पर बड़ा गुस्सा आया, उसने घर लौटकर अपनी पत्नी को खूब डाँटा।

"संन्यासी के मन में पारिवारिक बंधन तथा कामनाएँ नहीं होनी चाहिए। उसमें तो आत्म निग्रह होना चाहिए।" पत्नी ने समझाया। फिर क्या था, रामनारायण ने संन्यास लेने की अपनी इच्छा त्याग दी।

स्वार्थी

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। फिर यथावत् मौन हो श्मशान की ओर बढ़ने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा, ''राजन्, बारंबार मैं तुम्हें याद दिलाता रहता हूँ कि श्मशान में खूंख्वार जानवर हैं, भूत-प्रेत हैं और वे किसी भी समय तुम्हें हानि पहुँचा सकते हैं। इतने कष्ट सहने के बाद भी, जब तुम्हें मालूम होगा कि जिस व्यक्ति के लिए तुम इतने कष्ट झेल रहे हो, वह स्वार्थी है, विलास-प्रिय है, लंपट है तो तुम्हारा निराश हो जाना निश्चित है।
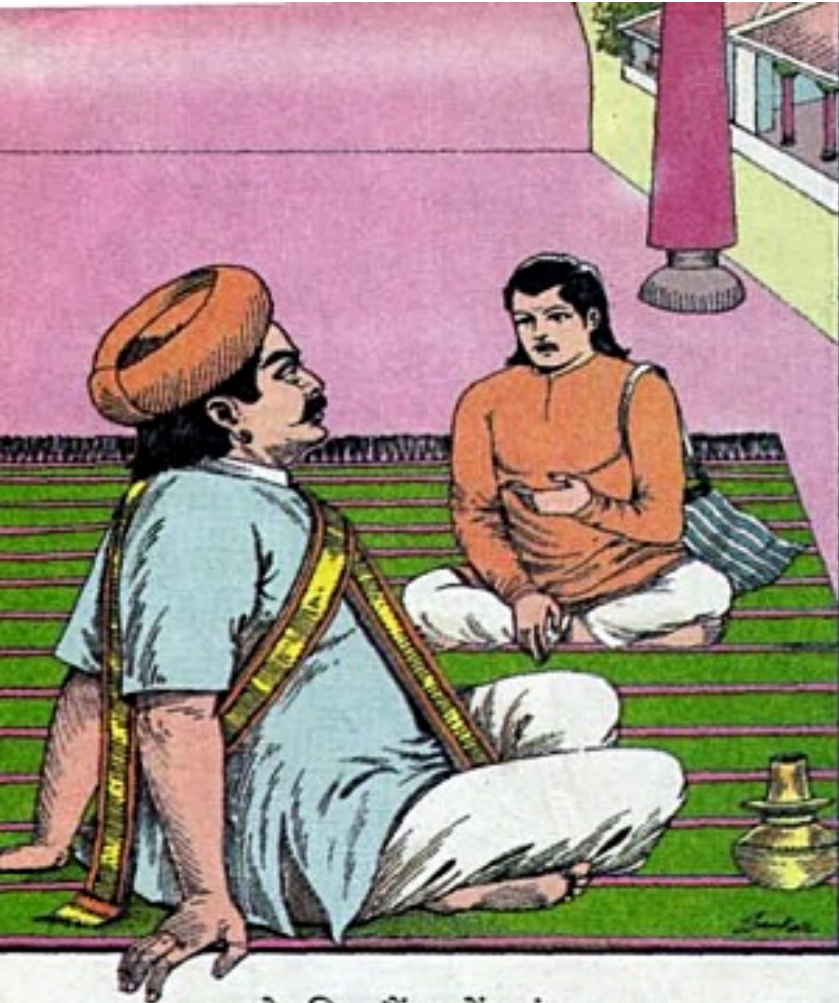
उदाहरण के लिए मैं तुम्हें स्पंदनदास नामक एक युवा कवि की कहानी सुनाना चाहूँगा। ध्यान से सुनो।'' फिर बेताल कहानी यों सुनाने लगा।

स्पंदनदास दुर्गापुर का निवासी था। वह तरह-तरह की कविताएँ सुनाने में बहुत ही समर्थ था। चाहे वे आदमी के बारे में हों या पशु के बारे में। वे पेड़ हों या पत्थर। लोग उसकी कविताओं को बड़े चाव से सुनते थे। और यथाशक्ति उसे दान दिया करते थे। इस तरह वह अपनी ज़िन्दगी आराम से काट रहा था।

उस गाँव में उसका एक बड़ा घर था, चार एकड़ की उपजाऊ भूमि थी और दस हजार अशर्फ़ियों की नक़द भी। उसने सोचा कि जब इतनी सुविधाएँ हैं तो तुरंत विवाह क्यों न कर लूँ और आराम से वैवाहिक जीवन क्यों न बिताऊँ। पर इतने में उस प्रदेश में अकाल पड़ गया।

इधर दो सालों से उस प्रांत में वर्षा नहीं हुई थी। संपन्नों पर इस अकाल का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उनके पास जो था, उससे वे अपने दिन आराम से काट रहे थे। लेकिन ग़रीबों की बड़ी दुर्दशा थी। खाने-पीने के लिए उनके पास कुछ नहीं रह गया। वे गाँव छोड़कर कहीं दूर जाकर रहने की सोच रहे थे। जगन नामक उसी गाँव का युवक दूर-दूर प्रांतों में घूमकर आया और ग्रामीणों से कहने लगा, ''अब इस गाँव में हमारे लिए रखा ही क्या है? मैंने फतेहपुर नामक एक जगह देखी है,जो हमारे रहने लायक़ है। वहाँ हम काम करके अपना पेट भर सकते हैं।'' पर गाँव के बड़े लोगों को उसकी सलाह अच्छी नहीं लगी।

उन्होंने कहा, ''स्पंदनदास की कविता सुने बिना हमसे रहा नहीं जायेगा। एक शर्त्त पर हम गाँव छोड़ने को तैयार हैं। स्पंदनदास को भी हमारे साथ आने के लिए मनाओ, फिर साथ-साथ चलेंगे।''

जगन ने स्पंदनदास के सामने यह प्रस्ताव रखा और वस्तु-स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा, ''तुम भी हमारे साथ चलो। तुम्हारे बिना गाँव के लोग इस गाँव को छोड़ना नहीं चाहते।''

जगन की बातों को सुनकर स्पंदनदास को बड़ा कष्ट हुआ। वह तुरंत गाँव के मुखिया चौधरी से मिला और बोला, ''आप कुछ कीजिए। गाँव के लोग गाँव छोड़कर जाना चाहते हैं।'' इसपर चौधरी

ने अपनी लाचारी ज़ाहिर करते हुए बताया, "गाँव की दुस्थिति के बारे में महाराज को मैं बता चुका हूँ। पर कोई नतीजा नहीं निकला। जो जाना चाहते हैं, वे चले जाएँ। हमारे सामने उन्हें रोकने का कोई रास्ता भी तो नहीं है।"

स्पंदनदास सीधे जगन के पास गया और उससे बोला, "आप लोग कुल मिलाकर दो सौ हैं। आप लोगों के खाने-पीने के लिए हर रोज़ हर आदमी के हिसाब से दो सौ अशर्फ़ियाँ दूँगा। मैं खुद यह सारा खर्च उठाऊँगा। परन्तु कोई भी गाँव छोड़कर न जाए।"

जगन उसकी बातों पर आश्चर्य प्रकट करता हुआ बोला, "तुम्हारी दानशीलता महान है। पर कब तक हमारी देखभाल कर पाओगे?"

"मैं दो दिनों तक गाँव भर में घूमूँगा। लोगों के कष्टों को स्वयं जानूँगा। उन कष्टों पर मैं कविताएँ लिखूँगा। वे कविताएँ महाराज को सुनाऊँगा। उन्हें सुनकर महाराज का दिल ज़रूर पिघल जायेगा। अगर मेरी कविताओं में यह शक्ति नहीं तो कविताएँ करने का शौक ही छोड़ दूँगा।"

अपने वचन के अनुसार स्पंदनदास दो दिनों तक गाँव में घूमता रहा। प्रजा की दुस्थिति को देखकर उसमें जोश भर आया। बस, उसने अद्‍भुत कविताएँ सुनायीं। उसकी कविताओं में जनता की दुर्दशा का बड़ा ही मार्मिक वर्णन था। कठोर से कठोर हृदय को छूने में भी वे समर्थ थीं। उन्हें लेकर वह राजधानी गया।

स्पंदनदास ने दरबार में आकर, अपना

परिचय दिया और दुर्गापुर के ग्रामवासियों की दुस्थिति का वर्णन करते हुए अपनी लिखी एक कविता सुनायी। उसे सुनकर राजा और दरबार में उपस्थित सभी लोगों की आँखों से आँसू बहने लगे।

थोड़ी देर बाद राजा ने अपने को संभाला और मंत्री की ओर मुड़कर कहा, "दुर्गापुर की सहायता पहुँचाने के सभी प्रबंध तुरंत किये जाएँ।" फिर स्पंदनदास से कहा, "कविवर, आपकी कविता ने मेरे हृदय को झकझोर दिया है। केवल आपके दुर्गापुर के लोगों की ही नहीं, बल्कि उन सब लोगों की सहायता की जायेगी, जो ऐसी दुस्थिति में हैं।" यह सुनते ही स्पंदनदास खुशी से फूल उठा। फिर उसने वे कविताएँ भी सुनायीं, जिनमें मनोहर प्राकृतिक

दृश्यों का वर्णन था। सभी दरबारी पुलकित होकर हर्ष-ध्वनियाँ करने लगे।

राजा ने चाहा कि स्पंदनदास आस्थान कवि के पद पर सुशोभित हो। पर उसने कहा कि ग्रामवासियों की स्वीकृति के बाद ही यह संभव हो सकता है।

जगन को इस बात का पता चल गया कि राजा ने स्पंदनदास की विनती मान ली और उसका दरबार में सत्कार भी हुआ तो वह दुर्गापुर से निकलकर राजधानी पहुँचा। उसने राजा से मिलकर कहा, ''प्रभु, स्पंदनदास की कविताओं पर हमारे ग्रामवासी मरते हैं। भूखा ही सही, वे उसी के लिए गाँव में रह जाने का भी निर्णय ले चुके हैं। ऐसे महान व्यक्ति को हमसे दूर करना न्यायसंगत नहीं है। यह आपको शोभा नहीं देता। आप स्पंदनदास को गाँव का प्रधान नियुक्त कीजिए। इस तरह वे हमारे ही साथ रहेंगे और हमारी देखभाल करते रहेंगे।''

पर स्पंदनदास ने जगन की विनती को ठुकराते हुए कहा, ''जब मैं वहाँ नहीं था, तब भी दुर्गापुर के लोग सुखी थे, संतुष्ट थे। मैं थोड़े ही शाश्वत हूँ। मुझे राजा के दरबार में रहने दो। बीच-बीच में मैं दुर्गापुर आता रहूँगा और अपनी कविताएँ सुनाता रहूँगा। मुझसे अधिक महत्वपूर्ण हैं, आहार, वस्त्र व निद्रा।'' यों जगन को समझाकर वहाँ से भेज दिया।

बेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद राजा से कहा, ''राजन्, यह स्पष्ट है कि दुर्गापुर के निवासी स्पंदनदास को बहुत चाहते थे, उसका बड़ा आदर करते थे। अकाल के समय भी उन्होंने ठान ली कि

अपने भारत को जानो

प्रश्नोत्तरी

भारतीय परम्परा हिन्दू पौराणिक कथाओं के सुदृढ आधार पर निर्मित कहा जा सकता है। भारतीय बच्चे निश्चित रूप से महाभारत और रामायण महाकाव्यों से परिचित होंगे। उन्होंने १८ पुराणों से कहानियाँ भी सुनी होंगी। इस महीने की प्रश्नोत्तरी हिन्दू पुराणों के इर्दगिर्द बुनी गई है। देखें, तुम निम्नलिखित प्रश्नों में उल्लिखित व्यक्तियों, स्थानों और घटनाओं से कितने परिचित हो!

१. कुछ लोगों का एक समूह ऐसा है जिन्हें खाने-पीने की ज़रूरत नहीं पड़ती, और न नींद व आराम की। फिर भी वे कठिन तपस्या करने में समर्थ होते हैं। उस समूह का नाम बता सकते हो?

२. हिमालय की पुत्री अथवा पर्वत से उत्पन्न कौन है? उसके दो नाम जो पर्वत के अर्थ से संबंधित हों, बताओ।

३. एक स्त्री अपने पति, जो एक ऋषि थे, के शाप से पत्थर बन गई। एक दिव्य पुरुष के चरणों के स्पर्श से वह शाप मुक्त हुई। इस घटना से संबंधित तीनों व्यक्तियों के नाम बताओ।

४. क्षीर सागर के मंथन से अनेक रत्न प्रकट हुए। उनमें से एक हाथी था जो देवराज इन्द्र की सवारी बना। हाथी का नाम क्या था?

५. कृष्ण के मामा और मथुरा के राजा कंस के पिता का नाम बताओ।

६. नाग अर्द्ध दिव्य सत्ताएँ थे, जिनका मुख मनुष्य का और पृष्ठ भाग सर्प का था। एक नाग की आग से रक्षा राजा नल ने की थी। वह नाग कौन था?

७. उसका पति जन्मजात नेत्रहीन था। उसने भी अपनी आँखों पर पट्टी इसलिए बाँध ली कि वह पति से अधिक सुख भोग न कर सके। वह कौन थी।

अपने भारत को जानो

प्रश्नोत्तरी

भारतीय परम्परा हिन्दू पौराणिक कथाओं के सुदृढ आधार पर निर्मित कहा जा सकता है। भारतीय बच्चे निश्चित रूप से महाभारत और रामायण महाकाव्यों से परिचित होंगे। उन्होंने १८ पुराणों से कहानियाँ भी सुनी होंगी। इस महीने की प्रश्नोत्तरी हिन्दू पुराणों के इर्दगिर्द बुनी गई है। देखें, तुम निम्नलिखित प्रश्नों में उल्लिखित व्यक्तियों, स्थानों और घटनाओं से कितने परिचित हो !

१. कुछ लोगों का एक समूह ऐसा है जिन्हें खाने-पीने की ज़रूरत नहीं पड़ती, और न नींद व आराम की। फिर भी वे कठिन तपस्या करने में समर्थ होते हैं। उस समूह का नाम बता सकते हो?
२. हिमालय की पुत्री अथवा पर्वत से उत्पन्न कौन है? उसके दो नाम जो पर्वत के अर्थ से संबंधित हों, बताओ।
३. एक स्त्री अपने पति, जो एक ऋषि थे, के शाप से पत्थर बन गई। एक दिव्य पुरुष के चरणों के स्पर्श से वह शाप मुक्त हुई। इस घटना से संबंधित तीनों व्यक्तियों के नाम बताओ।
४. क्षीर सागर के मंथन से अनेक रत्न प्रकट हुए। उनमें से एक हाथी था जो देवराज इन्द्र की सवारी बना। हाथी का नाम क्या था?
५. कृष्ण के मामा और मथुरा के राजा कंस के पिता का नाम बताओ।
६. नाग अर्द्ध दिव्य सत्ताएँ थे, जिनका मुख मनुष्य का और पृष्ठ भाग सर्प का था। एक नाग की आग से रक्षा राजा नल ने की थी। वह नाग कौन था?
७. उसका पति जन्मजात नेत्रहीन था। उसने भी अपनी आँखों पर पट्टी इसलिए बाँध ली कि वह पति से अधिक सुख भोग न कर सके। वह कौन थी।
८. जिस जंगल में राम, सीता और लक्ष्मण वनवास कर रहे थे, और जहाँ से सीता का रावण द्वारा अपहरण किया गया था, उसका नाम क्या है?

(उत्तर अगले महीने)

फरवरी प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. अरुणाचल प्रदेश।
२. मध्य प्रदेश।
३. मणिपुर।
४. बिहार - विहार शब्द से।
५. शिमला, हिमाचल प्रदेश।
६. केरल।
७. चण्डीगढ — पंजाब और हरियाणा।
८. उत्तर प्रदेश — हरद्वार और इलाहाबाद।

भारत की गाथा

एक महान सभ्यता की झाँकियाँ : युगों-युगों से सत्य के लिए इसकी खोज

२६. भविष्य की एक अनोखी झलक

संदीप, चमेली और उनके मित्र अभी तक जनश्रुत राजा विक्रमादित्य पर मंत्रमुग्ध थे। अगले रविवार की बैठक में भी उसका नाम उभर कर आया। ''कितना साहसी राजा था वह!'' चमेली ने टिप्पणी की।

''सच, जो राजा अपने दरबार में कालिदास सहित नौ प्रतिभाओं को एकत्र कर सकता है, वह स्वयं एक प्रतिभा रहा होगा।'' उसके एक मित्र डॉली ने कहा।

ग्रैंडपा देवनाथ हँस पड़े। ''पिछले दिन जो मैंने कहा था वह इतनी जल्दी भूल गये! इतिहासकार ऐसा नहीं मानते कि वे नौ प्रतिभाएँ एक ही समय में हुई थीं। किन्तु लोग कई पीढ़ियों तक विक्रमादित्य से इतने मोहित थे कि उन्होंने उसे अवर्णित साहस और गुणों का एक राजा मान लिया। उसके अतिरिक्त और कौन ऐसे विद्वानों का संरक्षक हो सकता है?''

''किन्तु ग्रैंड पा, पहली शताब्दी में निश्चित रूप से विक्रमादित्य नाम का एक राजा था।'' संदीप ने अपना विचार प्रकट किया।

''मेरा विश्वास है कि वह था और जैसा कि मैंने पिछली बार कहा है, वह अवश्य ही बहुत लोकप्रिय और शक्तिशाली राजा रहा होगा। एक नया सम्वत 'विक्रमाब्द' किसी साधारण शासक

-विश्वावसु -

की स्मृति में कभी नहीं आरम्भ किया गया होता। हमारे देश में आज भी ऐसे बहुत हैं जो वर्षों और शताब्दियों की गणना इसी परंपरा से करते हैं।'' प्रोफेसर ने कहा।

''किन्तु उसे केंद्रित करके बेताल की कथाओं की रचना किसने की?'' डॉली ने प्रश्न किया।

''मैं नहीं जानता और मुझे आश्चर्य है कि कोई इतिहासकार भी जानता होगा। कुछ इस प्रकार हुआ होगा कि विक्रम अपनी बिलक्षण हाजिर जवाबी और प्रज्ञा के लिए प्रसिद्ध रहा होगा। उसने अनेक समस्याओं का समाधान बड़े शानदार ढंग से किया होगा।

उसके अपने काल के लोग उसके फैसलों से बहुत प्रभावित रहे होंगे। संभवतः उन्होंने कल्पना की होगी कि वह न केवल मानवों के द्वारा रखी गई समस्याओं का बल्कि बेताल जैसी अलौकिक सत्ताओं की समस्याओं का भी समाधान कर सकता है। जिस प्रकार वह बेताल के साथ व्यवहार करता है, उससे उसके साहस का परिचय मिलता है और जिस प्रकार उस अलौकिक सत्ता के बेढंगे प्रश्नों के उत्तर देता है, उससे उसकी हाजिर जवाबी का पता चलता है।'' प्रोफेसर ने कहा।

''कोई उदाहरण...।'' डॉली ने पूछा।

''क्यों? क्या तुमने राजा विक्रम और बेताल की प्रसिद्ध पचीस कहानियाँ नहीं पढ़ी हैं? प्रोफेसर ने पूछा।

यह शीघ्र ही स्पष्ट हो गया कि संदीप और चमेली को छोड़ कर किसी अन्य को ये कहानियाँ नहीं मालूम थीं। लेकिन ये इतने चतुर थे कि इन्होंने झट अपने अज्ञान को अपने लाभ में बदल दिया। उन्होंने ग्रैंड पा से उनमें से कुछ कहानियाँ सुनाने का अनुरोध किया।

''तो सुनो, आज एक ऐसी कहानी सुनाते हैं, जो आधुनिक प्रगति के कारण वह प्रासंगिक हो गई है।'' और उन्होंने यह कहानी सुनाई :

एक समय की बात है। कभी धवल नाम का एक युवा व्यक्ति था। जब वह छोटा था तब वह एक ऋषि की संगति से प्रभावित होकर स्वयं ऋषि बनने का स्वप्न देखने लगा। वह सांसारिक जीवन से विरक्त होकर संन्यासी बनने की कामना करने लगा।

फिर भी जब वह बड़ा हो गया तो उसके माता-पिता ने उसे विवाह करने पर विवश कर दिया। उसकी पत्नी एक नेक स्त्री थी और वह सुखी था। एक दिन उसका साला किसी पर्व के अवसर पर उसे और अपनी बहन को अपने घर

ले जाने के लिए उसके यहाँ आया। ये तीनों एक जंगल से होकर गुजर रहे थे। एक घंटा चलने के बाद स्त्री थक गई। इसलिए वे तीनों थोड़ा आराम करने के लिए एक वृक्ष के नीचे बैठ गये।

तभी धवल की आँखें एक उजाड़ मंदिर पर पड़ीं। उत्सुकतावश वह उसके अंदर चला गया। मंदिर के अंदर का वातावरण एक देवी की एक मात्र प्रतिमा की अलौकिक उपस्थिति से ओतप्रोत था। उस अलौकिक नीरवता में धवल को अचानक उसके संन्यास लेने के पूर्व-संकल्प की स्मृति हो आई। उसका मन पश्चाताप से भर गया। परमात्मा की ओर ध्यान न देकर एक सामान्य व्यक्ति के समान जीवन बिताने से क्या लाभ? उसने सोचा। तब वह कुछ अप्रत्याशित कर बैठा। उसने प्रतिमा के हाथ से तलवार ले ली और अपना सिर काट लिया।

कुछ देर के बाद उसका साला धवल को बुलाने के लिए अंदर गया। जो कुछ उसने देखा उससे उसका दिल दहल गया। अपनी बहन को अपना चेहरा कैसे दिखाये? एक गहरे विषाद से अनुप्रेरित होकर उसने भी वही किया जो धवल कर चुका था।

घण्टा बीत गया। शाम हो रही थी। यह देखने के लिए कि अभी तक वे क्यों नहीं लौटे, स्त्री मंदिर के अंदर गई। उसने जो कुछ अंदर देखा, वह सह नहीं सकी। ऐसे विस्मयकारी ढंग से अपने पति और भाई को खोकर क्या वह जीवित रह पायेगी! उसने भी तलवार उठा ली।

जब वह अपनी गरदन पर तलवार चलाने ही वाली थी कि एक आवाज आई - ''ठहरो।'' उसे

लगा कि यह आवाज प्रतिमा से आई है। ''तुम्हारे पति का यह सोचना मूर्खतापूर्ण था कि संन्यास लिये बिना वह आध्यात्मिक जीवन नहीं जी सकता था। तुम्हारे पति के जैसा ही काम करनेवाला तुम्हारा भाई भी उतना ही मूर्ख था। लेकिन तुम्हें इतनी जल्दी करने की ज़रूरत नहीं है।''

''हे भगवती माता! मैं उन सब के बिना कैसे जीवित रहूँ? कहाँ मैं जाऊँ।'' स्त्री ने पूछा।

''उनके सिर और धड़ को मिला दो और मेरे पाँव के निकट रखे पात्र का जल उनके ऊपर छिड़क दो। वे पुनर्जीवित हो जायेंगे।'' आवाज ने कहा।

स्त्री ने वैसा ही किया। आश्चर्य! वे उठ बैठे! ''इस सुनसान स्थान में हमें नींद कैसे आ गई। बडी विचित्र बात है!'' वे दोनों भुनभुनाये। स्त्री ने कुछ नहीं कहा। वे पुनः अपने मार्ग पर चल पड़े।

अभी वे कुछ ही दूर गये थे कि स्त्री को अपनी एक भयानक भूल का एहसास हुआ। उसने अपने भाई का सिर अपने पति के शरीर पर और अपने पति का सिर अपने भाई के शरीर पर लगा दिया था।

वेताल ने यह कहानी सुनाकर राजा से पूछा, ''हे राजन ! स्त्री को किसे अपना पति समझना चाहिए - क्या उसे जिसके शरीर पर पति का सिर है या उसे जिसके शरीर पर भाई का सिर है?''

राजा ने झट उत्तर दिया, ''निस्संदेह उसे जिसके शरीर पर उसके पति का सिर है, क्योंकि सिर से ही व्यक्तित्व की पहचान होती है।''

''रोचक और मनोरंजक !'' जैसे ही प्रोफेसर ने कहानी समाप्त की, श्रोताओं ने विस्मय प्रकट किया।

''सच, रोचक और मनोरंजक अवश्य है। लेकिन क्या मैंने यह नहीं कहा कि कहानी जो मैं कहने जा रहा हूँ, वह वर्तमान समय के लिए प्रासंगिक भी है? वह कैसे?'' प्रोफेसर ने पूछा।

बच्चे कुछ क्षणों के लिए अनिश्चित थे। संदीप ने ही पहल करते हुए कहा, ''ग्रैण्ड पा, इसका संबंध डॉ. क्रिश्चियन बर्नाड से तो नहीं है जिनका कुछ महीने पहले स्वर्गवास हो गया?''

''बिल्कुल ठीक मेरे बच्चे ! लगभग चार दशक पूर्व डॉ. बर्नाड ने एक व्यक्ति के हृदय को दूसरे व्यक्ति में सफलतापूर्वक प्रतिरोपित किया। इस पर काफी उत्तेजनापूर्ण चर्चा हुई यद्यपि वह सब अनुमान पर आधारित थी। क्या सिर का प्रतिरोपण भी संभव होगा? यदि ऐसा हुआ तो उस व्यक्ति की पहचान क्या होगी जिसका सिर किसी और से लिया गया है या यों कहें कि जिसका शरीर उधार का है। अस्तु ! क्या तुम नहीं समझते कि राजा विक्रम ने पहले ही इसका निश्चयात्मक उत्तर दे दिया है?''

''सचमुच, उन्होंने दे दिया है।'' बच्चे सहमत थे।

वीर पूजा

अरे वीर पूजा की बात ! मत पूछो। महाराष्ट्र के कोंकण तट पर सिन्धु दुर्ग में एक महान वीर के नाम पर एक मंदिर है। महान मराठा वीर छत्रपति शिवाजी के नाम पर। इस मंदिर में शिवाजी की एक बड़े धातु-आवरण के साथ पत्थर की प्रतिमा की पूजा की जाती है।

ऐसा कहा जाता है कि प्रतिमा के हाथ में रखी दुधार तलवार वही तलवार है जिसे शिवाजी प्रयोग में लाते थे। सिन्धु दुर्ग में आज भी ऐसे परिवारों की एक कॉलोनी है जिनके पूर्वज शिवाजी के सेवक थे।
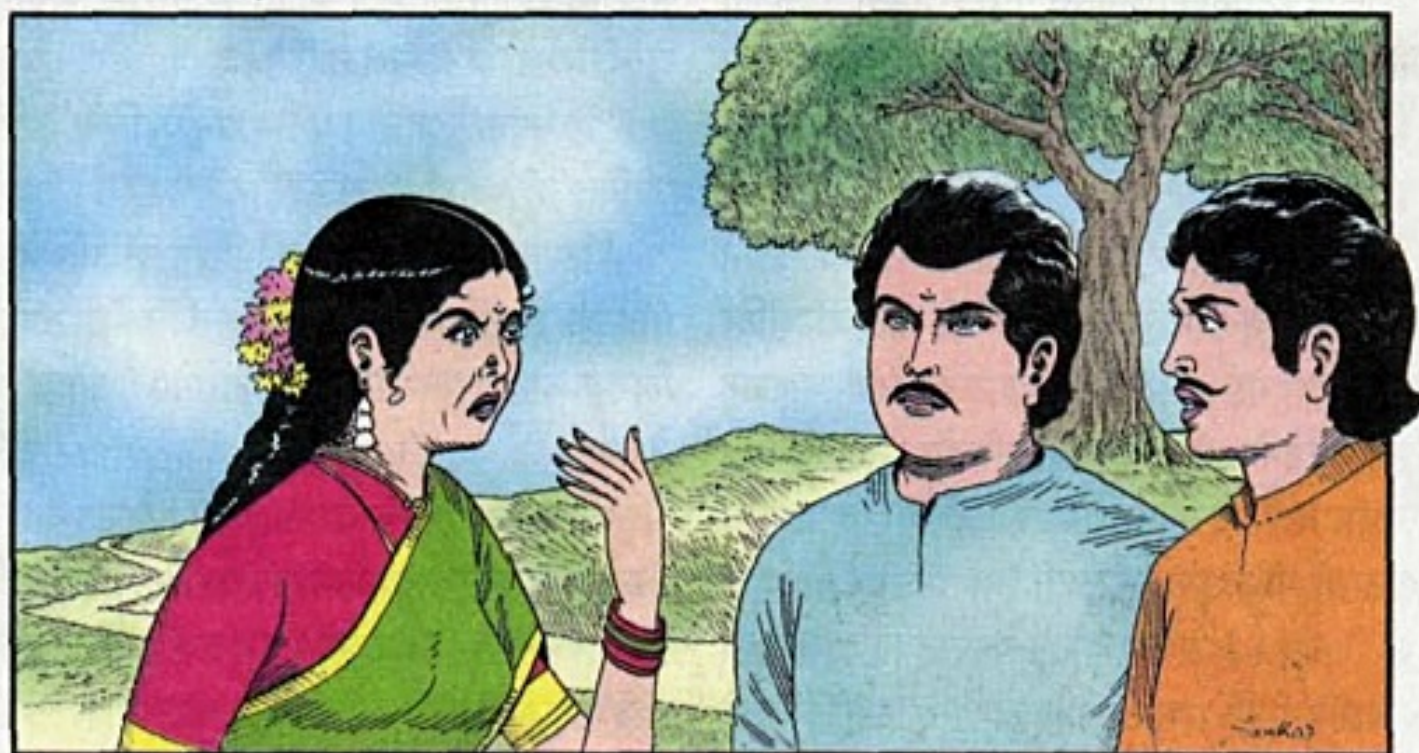
अकबर का रहस्य

अनुमान करो, सम्राट अकबर के चमकते चमड़े का रहस्य क्या था?

अकबरनामा के अनुसार वे महाराष्ट्र में औरंगाबाद के निकट लोनार झील के पानी से बने एक

प्रकार के साबुन का प्रयोग करते थे। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इस स्थान की खनिज सम्पदा और जल में असाधारण औषधीय और आरोग्यकर शक्ति थी। लोनार में एक विशाल गड्ढा बना हुआ है जहाँ लाखों वर्ष पूर्व एक क्षुद्र ग्रह धरती से टकरा गया था। गड्ढे में एक झील बन गई है जिसका पानी खारा है और इसमें बहुत प्रकार के जीवजन्तु पनप नहीं पाते।

नारी शक्ति

नीलगिरि पहाड़ियों की ठंडी हवा वाली शृंखलाओं में टोडा नाम का एक अल्प-ज्ञात आदिवासी समुदाय रहता है। वे छोटी-छोटी बस्तियों में रहते हैं जिन्हें मुंड कहते हैं। ये मूलतः पशुचारी होते हैं। टोडा लोगों में सामाजिक पदानुक्रम होता

है। वे कुछ नियमावली का बड़ी सख्ती से पालन करते हैं। एक नियम के अनुसार टोडा स्त्री उनके मंदिर में नहीं जा सकती। वास्तव में परंपरा के अनुसार मंदिर से कुछ दूरी पर घेरा बना देते हैं, जहाँ से आगे बढ़ना उनके लिए वर्जित होता है। और टोडा लोग किसकी पूजा करते हैं, जानते हो? एक देवी की जिसे वे टेकाई कहते हैं।

राजकीय रंग

यदि तुम शान शौकत और तड़क-भड़क से घिरे महाराजा होते तो होली किस प्रकार खेलते? क्या तुम गन्दे रंगों से अपने शानदार महल की दीवारों को गन्दा करने में कतराते? फिर तो होली रंगरली के लिए अपने महल से बाहर आओ अथवा अपने बुर्ज की बालकनी से अपने मित्रों को रंग भरे पानी से सराबोर कर दो। जयपुर के महाराजा और महारानियाँ परंपरा से इसी प्रकार होली खेलती हैं।

ऐतिहासिक लेख बताते हैं कि राजा हाथी पर सवार होकर
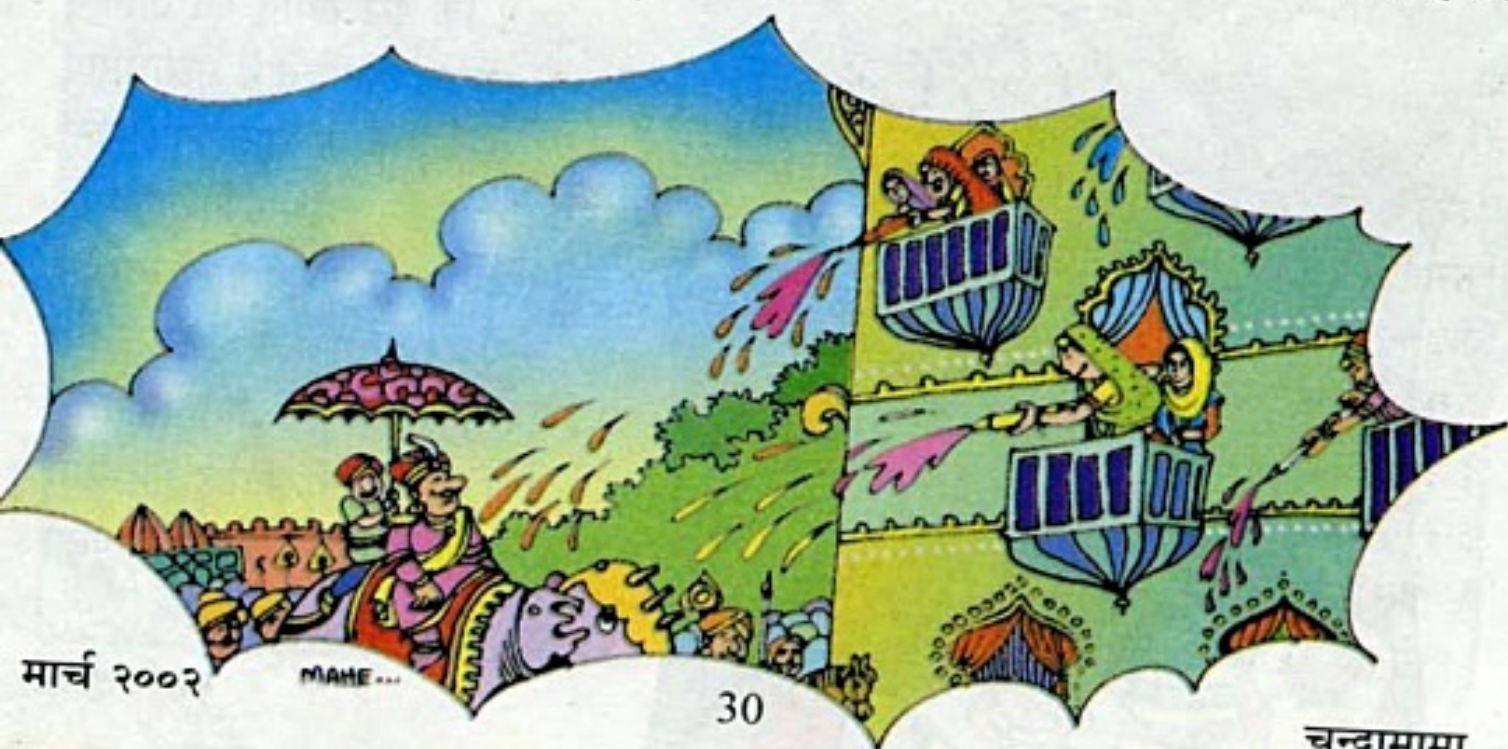
हवा महल और अन्य महलों के सामने आते। उनके चारों ओर रंगीन पानी से भरे ढेर सारे रोगन के कन्दूक लिये उनके नौकर-चाकर खड़े रहते।

राजा फिर महल के छज्जों और झरोखों में कतार में खड़ी रानियों और राजकुमारियों पर ये कन्दूकें फेंकते। रानियाँ उत्तर में अपनी छोटी पिचकारियों से उन शाही पुरुषों को रंगीन पानी का फुहारा छोड़कर तर बतर कर देतीं।

यह नारी- खेल नहीं है!

यदि तुम चौदह आदमियों को एक ही नारियल के पीछे दौड़ते-झपटते देखो तो क्या कहोगे? क्या तुम्हें आश्चर्य होगा कि नारियल में क्या खास बात है कि इतने लोग इसके पीछे पड़े हुए हैं, क्योंकि तुम सब जानते हो कि ये सब, हो सकता है, यूबी लकपी खेल रहे हों। यह 'नारियल झपटो' का खेल मणिपुरी लड़कों का बहुत ही लोकाप्रिय मैदानी क्रीड़ा है। यह एक प्रकार का रगबी है (कृपया लात से ठोकर न मारें; यह फुटबॉल नहीं है) जो एक समय पर दस से लेकर चौदह खेलाड़ियों के द्वारा खेला जाता है।

यूबी लकपी एक आयताकार मैदान में खेला जाता है। मैदान के एक छोर पर एक घेरा बना होता है। गेंद को यानी चिकनाईयुक्त नारियल को दूसरे किनारे से फेंकना होता है और खेल का उद्देश्य होता है गेंद को घेरे हुए क्षेत्र में डालना। जो खेलाड़ी नारियल को झपट लेता है, उससे चिपका रहता है और घेरे में डाल देता है, वह खेल में जीत जाता है। और यदि खेल में जोश बढ़ जाता है और धक्कम-धुक्की होने लगती है तो खेलाड़ियों पर ठण्ढा पानी डाल कर उन्हें अलग कर दिया जाता है।

क्या कोई रगबी खेलना चाहेगा?

वाग्विदग्ध – गोपाल भाँड़

गोपाल भाँड़ के पिता की पहली बरसी थी और उसे पुरोहित के पास जाने के लिए नाव से लम्बी दूरी तय करनी थी। ''चप्पू जल्दी जल्दी चलाओ। मुझे शुभ मुहूर्त में अनुष्ठान करना है।'' उसने नाविक को प्रेरित किया।

पुरोहित दिवंगत आत्मा की प्रशंसा में श्लोक बोलने लगा और गोपाल अनुष्ठान करने लगा। अचानक पुरोहित ने रुक कर कहा, ''तुम्हारे पिता ने मुझसे एक सौ रुपया उधार लिया था। वह अभी लौटा दो नहीं तो अनुष्ठान पूरा नहीं करूँगा।''

गोपाल हक्का-बक्का रह गया। चाहे जो हो, शुभ मुहूर्त के अन्दर ही अनुष्ठान पूरा होना चाहिए। ''अनुष्ठान को पूरा होने दीजिए स्वामी ! कल सुबह तक आपके द्वार पर ही आपका रुपया पहुँच जायेगा।'' उसने विश्वास दिलाया।

कटहल का मौसम था। अनुष्ठान के बाद वह अपने घर के पिछवाड़े में फेंके हुए कटहल के बीज चुनने लगा। उसने उन बीजों को एक बोरे में भर दिया और वहीं ले गया जहाँ वह ठहरा हुआ था। ''क्या मैंने नहीं कहा था दरवाजे पर?'' उसने सोचा। ''उसे अपने दरवाजे पर ही मिलेगा।''

नीरव रात्रि में गोपाल पुरोहित के घर गया और उसके आँगन में पंक्ति में बीज बोने लगा। सुबह तक उसने काम पूरा कर दिया और पुरोहित के बाहर आने की प्रतीक्षा करने लगा।

सामने का द्वार खुला और पुरोहित बाहर आया। उस समय गोपाल बीजों को मिट्टी में डालकर पाँव से दबा रहा था। "क्या कर रहे हो गोपाल?" पुरोहित ने अपनी आँखें मलते हुए पूछा।
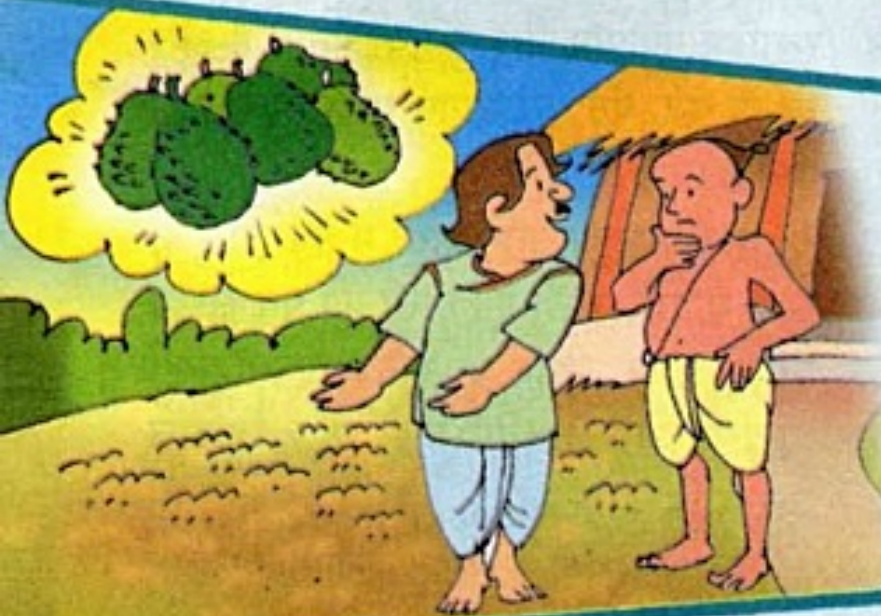
मैंने अपने पिता का लिया हुआ कर्ज चुकाने का वादा किया था। किया था न? मैंने यहाँ बहुत से कटहल के बीज बो दिये हैं - बहुत सारे!

"लेकिन कटहल का बीज पैसा तो नहीं है गोपाल!" पुरोहित ने विरोध किया। "लेकिन, महाशय! जब ये वृक्ष बन जायेंगे तब आपको ढेर सारे फल देंगे और आप उन्हें बेचकर पैसे कमायेंगे।" उन्होंने यह जोड़ते हुए कहा, "मैंने वादा किया था न कि पैसा आपके दरवाजे पर पहुँच जायेगा।"

भारतीय पर्व

होली

रंगों का त्योहार होली शरद ऋतु की विदाई और वसन्त के आगमन का सूचक है। हिन्दू पंचांग के अनुसार होली फाल्गुन महीने की पूर्णिमा को मनाई जाती है। ग्रगॅरियन पंचांग के अनुसार यह मार्च महीने में पड़ता है।

शरद ऋतु की समाप्ति के साथ फसलों की कटाई होने लगती है और वृक्ष नये-नये कोमल पत्तों के साथ अपनी पूरी बहार में आ जाते हैं। यह आमोद-प्रमोद और आनन्द मनाने का समय होता है। तीन दिनों तक चलनेवाला यह भारत का सबसे अधिक रंगीन और गुल-गपाड़िया त्योहार माना जाता है। छोटे-बड़े सभी एक दूसरे को गुलाल लगाते हैं।

वे एक-दूसरे पर पिचकारी से, जो हस्त दमकल जैसा परम्परागत उपकरण है, रंगीन पानी डालते हैं अथवा रंगीन पानी से भरे गुब्बारे या बैलून फेंकते हैं। गाना, नाचना और मिठाई बाँटना इस अवसर की एक विशेष रीति हो गई है। लोग इस दिन अनेक प्रकार के परम्परागत स्वादिष्ठ पकपान जैसे गुजिया बनाते हैं और घर के बड़े-बूढ़े परम्परागत मादक पेय भांग पीते हैं।

होली सम्पूर्ण उत्तर भारत में हर्षोल्लास के साथ मनायी जाती है। होली की पूर्व संध्या पर लोग एक स्थान पर एकत्र होकर सूखी पत्तियों और टहनियों से एक विशाल उत्सवाग्नि जलाते हैं।

कई अन्य पर्वों के समान होली भी बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। इस पर्व के साथ कई दन्तकथाएँ और पौराणिक गाथाएँ जुड़ी हुई हैं।

मान्यता है कि कृष्ण के मामा कंस ने उन्हें बचपन में मारने के लिए पूतना नाम की एक

राक्षसी को भेजा था। पूतना एक सुंदर स्त्री के बेश में कृष्ण के घर गई। जब वह बच्चे को दूध पिलाने के बहाने अन्दर गई तो कृष्ण ने उसकी प्राणिक शक्ति चूस ली।

होली की पूर्व-रात्रि में उत्सवाग्नि में पूतना का पुतला जलाया जाता है। आज भी मथुरा में, जो कृष्ण का जन्म स्थान है, पुतला जलाकर होली मनायी जाती है। ऐसा भी माना जाता है कि कृष्ण बसन्त पर्व में गोपियों के साथ होली खेला करते थे। होली प्रायः कृष्ण की रासलीला के साथ जुड़ी हुई है। मथुरा में होली का दूसरा आकर्षण है मटका-फोड़।

मक्खन प्रेमी कृष्ण बचपन में अक्सर सिकहर के पात्र को पकड़ने के लिए गोपों के कन्धों पर चढ़ा करते थे।

होली से जुड़ी दूसरी पौराणिक कथा होलिका की है। होलिका असुर राज हिरण्यकश्यप की बहन थी। उसका बेटा प्रह्लाद विष्णु भगवान का पक्का भक्त था। हिरण्यकश्यप को यह पसन्द नहीं था। उसने प्रह्लाद को मारने के लिए कई तरीके अपनाये किन्तु सफलता नहीं मिली।

होलिका में एक विलक्षण शक्ति थी। अग्नि उसे जला नहीं सकती थी। इसलिए उसने एक दिन प्रह्लाद को गोद में बिठाकर अग्नि में प्रवेश किया। किन्तु होलिका आग में भस्म हो गई और प्रह्लाद बच गया। इसलिए इस दिन को बुराई पर अच्छाई की विजय के प्रतीक के रूप में उत्सव मनाया जाता है।

होली के लिए संकेत

- ✓ रंग खेलने के लिए पुराने कपड़े पहनो।
- ✓ ध्यान रखो कि गुलाल आँखों में न जाये।
- ✓ यदि गुलाल आँख में पड़ जाये तो तुरन्त आँख धो लो।
- ✓ होली खेलने के बाद शरीर को ठीक से साफ करो।
- ✓ सुख्यात दूकानों से अच्छी गुणवत्ता का गुलाल खरीदो।
- ✓ रंगीन पानी से भरे गुब्बारों से कभी होली न खेलो।

जमशेदजी नवरोज

फसली पंचांग माननेवाले पारसियों के लिए नया साल वसन्त विषुव के साथ आरम्भ होता है। यह २१ मार्च को मनाया जाता है जो वसन्त के आगमन का सूचक है। नवरोज का शाब्दिक अर्थ नया दिन होता है।

यह-समारोह फारस के जनश्रुत राजा जमशेद के काल से मनाया जा रहा है जिन्होंने फारसी पंचांग में सौर गिनती को नियमबद्ध किया और परिचित करांया। जिस दिन सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है उसी दिन को नये वर्ष का आरम्भ निश्चित किया गया। इसी दिन को नवरोज या जमशेद नवरोज कहा जाता है। इस दिन को पालन किया जानेवाला एक रोचक रिवाज यह था कि राजा को सोने और चाँदी के साथ तौला जाता और उसे गरीबों में बाँट दिया जाता।

पर्वों के दिन पारसी नये वस्त्र धारण करते हैं, मंदिरों में पूजा करते हैं, बागों या सामाजिक स्थलों पर जाते हैं, एक दूसरे को आमंत्रित करते और खाते-खिलाते हैं। दान देना पारसियों का प्रधान गुण माना जाता है और पर्वों के दिन उनसे तो विशेष उदारता की आशा की जाती है।

गुड फ्राइडे

ईसाई सिद्धान्त के अनुसार ईस्टर डे के पूर्व-शुक्रवार को ईसा मसीह को सूली पर चढ़ाया गया था। इसलिए इस दिन को गुड फ्राइडे के रूप में, क्रूसारोपण की स्मृति में एक शोक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

ऐसा विश्वास है कि ईसा मसीह की क्रूस पर मृत्यु उस दिन अपराह्न में तीन बजे हुई थी। केथोलिक गिरजा घरों में क्रूस पर से ईसा मसीह के शरीर को ले जाने की स्मृति में उस समय एक धर्मानुष्ठान किया जाता है। गिरजा घरों में उस
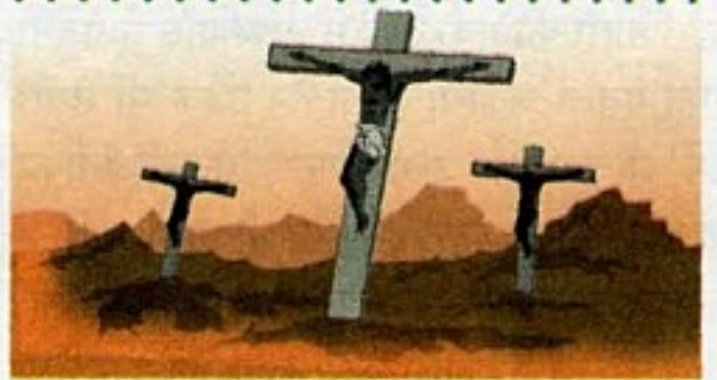
दिन घंटे नहीं बजाये जाते।

कुछ गिरजा घरों में काले वस्त्रों में शोक मनानेवाले ईसा मसीह की प्रतिमा के साथ एक जुलूस निकालते हैं और दफ़न की धर्मक्रिया करते हैं। गुड फ्राइडे के दिन सभी ईसाई धर्मावलम्बी उपवास करते हैं।

मुहर्रम

प्रथम मुस्लिम महीने के दसवें दिन मुहर्रम का त्योहार मनाया जाता है। यह पैगम्बर मुहम्मद के पोते हुसैन के शहीद होने की स्मृति में शोक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

पैगम्बर मुहम्मद के देहावसान के बाद खलीफा के पद के लिए अथवा वफादारों के नेता के लिए एक उत्तराधिकारी की आवश्यकता थी। पैगम्बर ने अपने उत्तराधिकारी का नाम नहीं बताया और न उनका कोई बेटा था। उनकी एक मात्र बेटी फातिमा का विवाह अली से हुआ था। और उनके हसन और हुसेन नाम के दो बेटे थे।

पैगम्बर के तीन उत्तराधिकारियों के बाद अली को चौथा खलीफा चुना गया। बहुत लोग इस चुनाव के खिलाफ़ थे। इसलिए अली को मार दिया गया और उसका उत्तराधिकारी बनने पर उसके बेटे हसन की भी हत्या कर दी गई। अली का दूसरा बेटा हुसेन मुहर्रम महीने के दसवें दिन करबला की लड़ाई में बड़ी दुखद परिस्थितियों में मारा गया।

मुस्लिम इस दिन जुलूस निकालकर मुहर्रम मनाते हैं। ताजिया या शहीद के मकबरे की शानदार प्रतिकृतियाँ जुलूस में शामिल की जाती हैं। मातमी अपने मातम का उन्मत होकर सार्वजनिक प्रदर्शन करते हैं। अंत में ताजियों को जमीन के अंदर दफना दिया जाता है अथवा नदियों या समुद्र में डुबा दिया जाता है। मुहर्रम में इस दुखद वृत्तान्त का चित्रण करनेवाले नाटकों का मंचन भी किया जाता है

मुहर्रम महीने के प्रथम दस दिनों तक मुस्लिम उपवास करते हैं, मातम मनाते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं।

पंजाब की एक लोक कथा

पाँच नदियों की भूमि पंजाब भारत के उत्तर-पूर्व भाग में बसा हुआ है। पंज का अर्थ है पाँच और आब का अर्थ है पानी। यानी पाँच पानी या नदियों की भूमि। इतिहास के अनुसार पंजाब में पाँच नदियाँ — ब्यास, सतलज, रावी, चनाब और झेलम बहती थीं। किन्तु क्षेत्रीय परिवर्तन के कारण अब भारत के अंतर्गत पंजाब में केवल दो नदियाँ बहती हैं — सतलज और ब्यास।

इस राज्य के उत्तर में जम्मू और कश्मीर, पूरब में हिमाचल प्रदेश, दक्षिण में हरयाणा और राजस्थान और पश्चिम में पाकिस्तान है। चण्डीगढ़, पंजाब और हरयाणा दोनों राज्यों की सम्मिलित प्रशासनिक राजधानी है। यहाँ का कुल क्षेत्रफल ५०,००० वर्ग कि.मी. और जनसंख्या २४,२८९,३०० है। यहाँ की राजभाषा पंजाबी और लिपि गुरुमुखी है।

वर्तमान पंजाब को १ नवम्बर १९६६ को राज्य बनाया गया जबकि इस क्षेत्र के एक भाग को एक साथ ही हरयाणा के नाम से पूरे राज्य का दर्जा दिया गया।

पंजाब कृषि शिल्प विज्ञान को हरित क्रांति में बदलनेवाला पहला राज्य था। इसने श्वेत क्रांति की अवधि में प्रति व्यक्ति अधिकतम दूध की उपलब्धि का भी मानक स्थापित किया।

सातवाँ राजकुमार

एक समय सतीन्दर नाम का एक राजा था जिसके सात बेटे थे। उसके पड़ोसी राजा भतीन्दर की सात बेटियाँ थीं। जब सतीन्दर के सातो बेटे विवाह के योग्य हो गये तब उसने सोचा कि इनका विवाह सातो राजकुमारियों के साथ ही करना ठीक होगा। इसलिए उसने एक विश्वासपात्र दूत को भेजकर राजा भतीन्दर से उसकी सातो

बेटियों का हाथ माँगा। भतीन्दर को आश्चर्य हुआ। उसे अपने भाग्य पर सहसा विश्वास नहीं हुआ कि कैसे उसकी सातो बेटियों के लिए एक बार में ही उपयुक्त वर मिल गये। वह तुरन्त राजी हो गया।

सतीन्दर का सातवाँ बेटा राजेन्दर थोड़ा विचित्र स्वभाव का था। उसने सोचा कि क्योंकि मेरे भाई शादी कर रहे हैं, इसीलिए मैं भी कर लूँ, यह ठीक नहीं है। मैं अभी इसके लिए तैयार नहीं हूँ। उसने इसलिए शादी करने से इनकार कर दिया।

''अरे पुत्तर !'' उसके दुखी पिता ने कहा। ''बुढ़ापे में मुझे क्यों दुःख देते हो? अच्छी कुड़ी है ! उससे विवाह कर ले।'' उसके पिता ने उसे मनाने की बहुत कोशिश की। किन्तु राजेन्दर अपनी ज़िद पर अड़ा रहा।

और कोई चारा न होने के कारण छः बेटों और छः बेटियों के विवाह हो गये। सबसे छोटी राजकुमारी माता-पिता के साथ रह गई। अन्य राजकुमारियों को धूमधाम से अपने अपने पति के पास भेज दिया गया।

छओ राजकुमारियों ने अनुभव किया कि राजेन्दर को समझाया जाये कि वह उनकी सबसे छोटी बहन से शादी कर ले। पहली राजकुमारी ने प्रयास किया पर कोई लाभ नहीं हुआ। तब उसने नाराज होकर कहा, ''फिर अच्छ बताओ, तब क्या करोगे? अनारकली से विवाह करोगे? कहाँ मिलेगी वह तुम्हें?''

सभी बहनें ताना मारने लगीं, ''अच्छ, तो तुम अनारकली से विवाह करोगे !''

राजेन्दर को बहुत क्रोध आ गया। उसने अपने पिता से कहा, ''मैं जा रहा हूँ और जब तक मैं अनारकली को पा न लूँ मैं नहीं लौटूँगा।''

उसके पिता ने उसे क्रोध से देखा। उसकी माँ ने अनुनय विनय किया। भाइयों ने डाँटा। लेकिन राजेन्दर पर कोई असर नहीं हुआ। वह अपने तेज सफेद घोड़े पर सवार होकर अनारकली की खोज में चल पड़ा, यद्यपि उसे कुछ नहीं मालूम था कि वह कहाँ मिलेगी या वास्तव में वह कहीं है भी।

वह बहुत देर तक चलता रहा और तब एक बाग में पहुँचा जो सूखा और अस्त-व्यस्त सा लग रहा था। राजेन्दर घोड़े से उतरा और थका होने के कारण एक वृक्ष के नीचे लेट गया। जल्दी ही उसे नींद आ गई। जब उसकी नींद खुली, तब शाम हो चुकी थी। वह बाग में घूमता रहा। उसे एक सरोवर मिला जहाँ कुछ पात्र रखे थे। पानी

बल्ले-बल्ले !

पंजाब गिद्दा और भांगड़ा - दो लोक नृत्यों का लगभग पर्याय हो गया है। पहले भांगड़ा का प्रदर्शन फसल कटने के बाद बैसाखी के अवसर पर गाँवों में किया जाता था। आजकल भांगडा शादी-विवाह, नये साल और जन्मदिन के समारोहों तथा सभी सामूहिक उत्सवों पर देखा जा सकता है।

लोक नृत्य का मुख्य आकर्षण द्रुतगति का संगीत और लय है। इस नृत्य के साथ जुड़ा हुआ बहुत महत्वपूर्ण वाद्य है ढोल। गीतों का भाव पंजाब की जनश्रुतियों पर आधारित है।

पीने के बाद बाग के पौधों में उसने पानी डाला। फिर बाग की छान-बीन की। उसने एक संत को देखा जो गहरे ध्यान में डूबे थे।

वास्तव में उस बाग को उसी महात्मा ने लगाया था। वे छः महीनों तक उसकी देखभाल करते और दूसरे छः महीनों तक गहरी समाधि में डूबे रहते। जब समाधि टूटती तब फिर से पौधों की सेवा करने लग जाते। राजकुमार बाग में ठहर गया और महात्मा के ध्यान टूटने की प्रतीक्षा करने लगा, क्योंकि उसने अनुभव किया कि उन्हें अनारकली के बारे में सम्भवतः कुछ मालूम हो।

कुछ दिनों के बाद राजकुमार की देखभाल का परिणाम बाग में दिखाई पड़ने लगा। सुंदर, रंगबिरंगे, सुगंधित पुष्प सर्वत्र खिलने लगे।

एक दिन संत का ध्यान टूटा और उन्होंने आँखें खोलीं। वे सुंदर और अच्छी तरह देखभाल किये गये बाग को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। तभी राजकुमार एक पात्र में पानी लिये वहाँ आया। उसने देखा कि संत ध्यान से बाहर आ गये हैं। उसने नत मस्तक होकर नमस्कार किया।

''पुत्तर, क्या तुमने ही बाग की देखभाल की है?'' महात्मा ने पूछा।

''जी हाँ, लेकिन इनमें पानी डालने के अलावा अधिक कुछ नहीं किया है।'' राजकुमार ने विनम्रतापूर्वक कहा।

''मैं तुमसे प्रसन्न हूँ और तुम्हें जो चाहिए मैं दूँगा।'' संत ने कहा।

राजेन्दर ने नम्रतापूर्वक उन्हें धन्यवाद दिया और कहा, ''मैं एक राजकुमार हूँ और मेरे घर में धन-दौलत की कमी नहीं है। किन्तु मैं अनारकली की खोज में निकला हूँ। यदि आप यह बता सकें

कि वह कहाँ मिलेगी तो मैं आपका कृतज्ञ रहूँगा।''

''इस गेंद को ले जाओ और मार्ग पर लुढ़का दो। यह एक अनार के वृक्ष के नीचे रुक जायेगा। उस वृक्ष का सबसे बड़ा अनार तोड़ लो। उसी में तुम्हें तुम्हारी अनारकली मिलेगी। लेकिन जब तक घर न पहुँच जाओ तब तक उसे काटकर न खोलो। अन्यथा उसे खो दोगे।'' संत ने उसे एक गेंद देकर समझाया।

राजकुमार ने वैसा ही किया और एक बड़ा अनार का फल घर ले गया। जब वह घर के निकट पहुँचा, वह एक बाग में आराम करने के लिए रुका। वहाँ उसे अचानक संदेह हुआ कि फल के अंदर शायद राजकुमारी न मिले और सब के सामने वह मूर्ख बन जाये। इसलिए उसने फल को काटकर खोल दिया। तुरंत हरी और सुनहरी साड़ी में एक सुंदर माला पहने एक सुंदरी उसके सामने प्रकट हो गई। उसे देखकर राजकुमार की सांस रुक गई और वह बेहोश हो गया। अनारकली, जो वास्तव में वही थी, अपनी गोद में उसका सिर रखकर उसके होश में आने की प्रतीक्षा करने लगी।

तभी हरप्रीत नाम की एक स्त्री वहाँ आई। ''कौन हो सुंदरी? यहाँ क्या कर रही हो।'' उसने अनारकली से पूछा।

निष्कपट राजकुमारी ने उसे सब कुछ सच सच बता दिया। ''उसने अचेत होने से पूर्व मुझे बस क्षण भर के लिए देखा। मैं उसके जागने का इंतजार कर रही हूँ।''

हरप्रीत स्वयं राजकुमार से विवाह करना चाहती थी। इसलिए उसने बहाना बनाया कि उसे राजकुमारी के परिधान और अलंकार बहुत

पसंद हैं।

''कितना खूबसूरत लहँगा है तुम्हारा ! और तुम्हारी ओढनी... कमाल की है ! क्या थोड़ी देर के लिए अपने कपड़े हमसे बदलोगी? मैंने ऐसे सुंदर वस्त्र कभी नहीं पहने और ऐसे कपड़ों में मैं कैसी लगती हूँ, यह देखने की बड़ी तमन्ना है मुझमें।'' उसने राजकुमारी को ऐसा करने देने के लिए फुसलाया।

तब उसने कहा, ''पता नहीं, इस पोशाक में मैं कैसी लग रही हूँ? इस बाग में एक कुआँ है और उसके पानी में मैं अपना अक्स देखना चाहती हूँ। क्या तुम भी मेरे साथ चलोगी?''

वे कुएँ पर गये और उसमें झाँक कर देखा। जब राजकुमारी झुककर कुएँ में देख रही थी, तब हरप्रीत ने उसे धक्का दे दिया। फिर वह सिर पर आँचल डालकर राजकुमार के पास आ गई। जब राजकुमार होश में आया, उसने कहा कि मैं अनारकली हूँ। उसे संदेह हुआ क्योंकि वह उतनी सुंदर नहीं थी जितनी पहले देखा था। लेकिन वहाँ

और कोई न था, इसलिए वह उसी को अपने साथ घर ले गया।

उनका बड़े धूमधाम से स्वागत किया गया। उनका विवाह कर दिया गया और वे एक सुंदर भवन में रहने लगे। शीघ्र ही राज्य भर में यह समाचार फैल गया कि एक कुएँ में, जहाँ हरप्रीत ने राजकुमारी को धक्का दे दिया था, एक सुंदर फूल खिल रहा है। यह अफवाह थी कि उसे कोई तोड़ नहीं सकता था। हरप्रीत को यह खबर मालूम हुई। दूसरे दिन सुबह उसने सिर दर्द के साथ खाट पकड़ ली।

"मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ?" राजेन्दर ने अपनी पत्नी से पूछा।

"कुएँ में जो फूल खिल रहा है, उसे तोड़ कर और उसकी पंखुड़ियों का लेप बनाकर मेरे ललाट पर लगा दो।" उसने कहा। राजकुमार ने वैसा ही किया। तुरंत उसके सिर में भयंकर पीड़ा होने लगी। उसने लेप को हटाकर छत की दीवार से महल के मैदान में फेंक दिया।

कुछ ही दिनों में उस स्थान पर जहाँ पर लेप गिरा था, एक मनोहर बाग उग आया। बाग के बीच में एक बहुत सुंदर अनार का वृक्ष था जिसमें एक बहुत बड़ा लाल-लाल चमकीला फल लटक रहा था।

जब हरप्रीत कुछ दिनों के बाद छत पर गई तब उस सुंदर बाग और अनार के वृक्ष तथा फल को देखकर चकित रह गई। वह तुरंत अपने कमरे में जाकर कराहने लगी।

"ओह! मुझे भयंकर पीड़ा हो रही है और यह तभी ठीक होगी जब महल के मैदान में उगे बाग को उखाड़ कर फेंक दिया जाये।" उसने राजकुमार से कराहते हुए कहा।

इसलिए राजेन्दर ने घोषणा करवा दी कि कोई भी व्यक्ति महल के मैदान से पौधे, फल और फूल ले जा सकता है। काफी संख्या में लोग आकर उन्हें ले गये।

अंत में एक छोटा बालक आया। उसने वृक्ष पर एक बड़ा फल देखा। किसी प्रकार उस पर किसी की नज़र नहीं पड़ी थी। उसने उसे तोड़ लिया और घर में जाकर अपनी बूढ़ी माँ को दे दिया। रात्रि भोजन में सरसों का साग और मकई की रोटी मक्खन के साथ खाने के बाद माँ ने फल

हस्तशिल्प

पंजाब अपने हस्तशिल्प के लिए प्रसिद्ध है। फर्श पर बिछाई जानेवाली दरियाँ छोटी लड़कियों द्वारा बुनी जाती हैं। इनमें परंपरागत आकल्प और मूल भाव का प्रयोग किया जाता है। दूसरी दस्तकारी, जो पंजाब की विशिष्टता है, सूई द्वारा बुनाई है जिसे फुलकारी कहा जाता है। यह सब तरह के कपड़ों पर किया जाता है जिनमें रूमाल भी सम्मिलित है। पंजाब का काष्ठ पर नक्काशी का कार्य भी बहुत प्रसिद्ध है।

काटने का निश्चय किया। जैसे ही अनार काटकर खोला गया, सुंदर अनारकली बाहर आ गई।

''डरो नहीं।'' उसने कहा। ''मुझे धी बना लो और मैं जीविकार्जन में तुम्हारी मदद करूँगी।''

माँ-बेटे उस सुंदर और मधुर भाषी कुड़ी पर मुग्ध हो गये और उसकी बात मान ली।

दूसरे दिन राजकुमारी ने कुछ कपड़ा और धागा लेकर बेलबूटा से एक सुंदर फुलकारी रूमाल तैयार किया।

''इसे राजकुमार राजेन्दर के पास ले जाकर बेच दो। वह इसकी अच्छी कीमत देगा।'' उसने लड़के से कहा।

लड़के ने ठीक वैसा ही किया। राजकुमार उस उत्कृष्ट बेलबूटे से बहुत प्रभावित हुआ और लड़के से पूछा कि यह फुलकारी किसने की है।

''मेरी बहन ने।'' लड़के ने कहा।

''जो इतनी सूक्ष्म और कोमल कसीदाकारी कर सकती है, वह स्वयं भी अवश्य बहुत सुंदर और कोमल होगी।'' राजकुमार ने सोचा।

''क्या तुम मुझे अपने घर ले चल सकते हो जिससे मैं उसे मिल सकूँ।'' उसने पूछा।

लड़का मना न कर सका, इसलिए वह राजकुमार को अपने घर ले गया। राजकुमार ने तुरंत अनारकली को पहचान लिया और उसकी माँ की स्वीकृति से उससे विवाह कर लिया। फिर वह अपने महल में गया और हरप्रीत को अपने राज्य से निकाल दिया।

राजेन्दर और अनारकली ने बहुत दिनों तक एक साथ सुखी जीवन बिताया।

दर्शनीय स्थान

अमृतसर सिक्खों का तीर्थस्थल है। नगर का नाम अमृत के सर यानी सरोवर से पड़ा है। नगर का निर्माण चौथे सिक्ख गुरु, गुरु रामदास द्वारा किया गया था। अमृतसर का स्वर्ण मंदिर सिक्खों के लिए सबसे पवित्र स्थान है। इसका नाम स्वर्ण मंदिर इसलिए पड़ा कि उसका ऊपरी गुम्बद स्वर्ण पत्रों से ढका हुआ है। जालियांवाला बाग, जहाँ सन् १९१९ में नरसंहार हुआ, इसके निकट बसा हुआ है।

चंडीगढ भारत का सबसे अधिक सुनियोजित और आधुनिक नगर है। इसकी रूपरेखा प्रख्यात फ्रांसिसी वास्तुकार लॅ कॉरबूजिए ने तैयार की। रॉक गॉर्डन, रोज़ गॉर्डन तथा पिंजौर गॉर्डन्स यहाँ के कुछ मुख्य आकर्षण हैं।

चतुर-चुस्त गोरैया

माँ-गौरैये ने अपने सबसे छोटे बच्चे पर सन्देह भरी नज़र डाली। उसके झुण्ड के अन्य सभी बच्चों ने उड़ना सीख लिया था और वे अपना प्रबंध करने चले गये थे। केवल यही नन्हा रह गया था। और जब उसने उसकी विलक्षण, गोल-गोल बड़ी आँखों में देखा, जो बड़ी निर्मल और निर्दोष थीं, तो उसे विश्वास नहीं हुआ कि वह अपना प्रबंध कभी कर भी पायेगा।

उसने आह भरते हुए सोचा : वह उसके साथ भरसक पूरी कोशिश करेगी। बाकी सब उसे अपनी शक्ति भर स्वयं ही करना होगा।

"आओ मेरे बच्चे !" माँ-गौरैये ने बड़े दुलार से बुलाया। "अब तुम्हें उड़ना सीख लेना चाहिए !"

"हाँ माँ !" उसने अपने नेत्रगोलकों को घुमाते हुए कहा और विनम्रतापूर्वक उसका अनुसरण किया।

उसने जल्दी ही सीख लिया और हर रोज़ कुछ अधिक दूरी तक उड़ने लगा और अन्त में अकेला ही गाँव के चारों ओर उड़ने के योग्य बन गया।

माँ-गौरैया उसके लिए बहुत खुश थी। हाँ, उसने उडना सीख लिया था। लेकिन क्या दुनिया के तौर-तरीके भी उतनी ही आसानी से सीख लेगा? उसे संदेह था। इसलिए उसने उसे कुछ युक्ति बताने का निश्चय किया जिससे उसे जीवित रहने में सहायता मिले।

"अब तुम्हें स्वयं अपनी देखभाल करना सीखना होगा। फिर भी तुम्हारी मदद के लिए मैं कुछ सुझाव देती हूँ," उसने कहा। "यदि तुम किसी खेत में हो, और किसी मनुष्य या लड़के को धनुष-बाण अथवा गुलेल के साथ अपनी ओर आते हुए देखो तो उड़ जाना ! नहीं तो वे अवश्य तुम पर निशाना लगायेंगे।"

"ठीक है माँ !" नन्हें ने सिर हिलाया।

"और यदि कोई जो तुम्हारे पास खडा हो, अचानक जमीन पर झुक जाये, तो और जल्दी उड जाना। वह संभवतः तुम्हें मारने के लिए पत्थर उठा रहा है।"

"हाँ माँ," नन्हें ने कहा। "तुम्हें उससे डरने की ज़रूरत नहीं है, जो नीचे झुक नहीं रहा है अथवा जिसके हाथ में कुछ नहीं है।" माँ कहती गई। "लेकिन जो जेब में पत्थर लिये है, उससे कैसे बचें?" नन्हें ने पूछा। कुछ क्षणों तक दोनों चुप रहे। फिर माँ-गौरैया बोली, "तुम मुझसे ज्यादा जानते हो। तुम जीवित रहोगे। अच्छा अलविदा !"

विघ्नेश्वर

तारकासुर निरंकुश था। त्रिपुरासुर नामक तीन राक्षसों ने उसके साथ-साथ तपस्या की और बरदान प्राप्त किये। आकाश में उड़ते हुए चक्कर काटनेवाले तीन नगरों का उन्होंने निर्माण किया। फिर वे तीनों लोकों पर टूट पड़े। ऊपर से वे अग्नि बरसाते थे और नगरों को, हरे-भरे गाँवों को जलाते जाते थे। जग का विध्वंस करने पर वे तुले हुए थे। सर्वत्र हाहाकार मच गया।

देवताओं को जब ज्ञात हुआ कि उन्हें मार डालने की शक्ति केवल शिव में ही है तो वे मंदिर के प्रांगण में इकट्ठे हो गये और ज़ोर-शोर से प्रार्थना करने लगे।

शिव का विवाह हाल ही में संपन्न हुआ था। पहले तो उन्होंने इन प्रार्थनाओं पर विशेष ध्यान नहीं दिया। पर जब त्रिपुरासुर के अत्याचारों का पता चला तो उनसे चुप बैठा नहीं गया। उनमें रोष भर आया। तत्क्षण त्रिशूल हाथ में लेकर त्रिपुरासुरों का संहार करने निकल पड़े। उनके साथ-साथ उनके अनुचर भी चल पड़े।

उसी समय जटाधारी हाथी के रूप में बदलकर एक राक्षस राजा लोक को भयभीत कर रहा था। चूँकि वह हाथी विराट था, मोटा, लंबा और चौड़ा था, इसलिए उसका नाम पड़ा गजासुर। वह महान शिव भक्त था। शिव के सिवा उसे कोई मार नहीं सकता, ऐसा बरदान भी वह प्राप्त कर चुका था।

"अपने ही में शिव को बसा लोगे तो और अच्छा होगा।" नारद ने उसे सलाह दी। नारद की बातें उसे सही लगीं। उसे विश्वास हो गया कि नारद उसी की भलाई के लिए ऐसा कह रहे हैं। बस, विलंब किये बिना वह शिव की पूजा-अर्चना करने लगा। तपस्या शुरू कर दी और

शिव को प्रसन्न करने में सफल हुआ। त्रिपुरासुरों के संहार के लिए निकले शिव गजासुर की इच्छा के अनुसार उसके हृदय में लिंग के रूप में बस गये।

"शिव गजासुर के हृदय में ही रह जाएँ तो त्रिपुरासुरों का संहार कैसे संभव होगा? नववधू पार्वती का प्रेम कैसे फलेगा? तारकासुर का वध तो पार्वती का पुत्र ही कर सकता है। इन दोनों का मिलन न हो तो हमारी आशाएँ कैसे फलीभूत होंगी?" देवता इस संकट को लेकर परेशान थे। उन्हें कोई उपाय सूझ नहीं रहा था। दुखी देवताओं को देखकर नारद ने उनसे कहा, "प्रशंसा से शिव फूलकर कुप्पा हो जाते हैं।" देवता उसका गूढ़ार्थ समझ गये। दूसरे ही क्षण वे गजासुर के सम्मुख शिव की प्रशंसा के पुल बांधने लगे। गला फाड़फाड़कर वे शिव की प्रशंसा में श्लोक पढ़ने लगे।

गजासुर भी तन्मय होकर उनके साथ-साथ शिव का भजन करने लगा। उसके हृदय में जो शिवलिंग था वह फूलता गया और गजासुर को चीर डाला।

अब शिव बाहर आ गये। गजासुर आँखें बंद करते हुए धीमी आवाज़ में कहने लगा, "मैंने आपका विश्वास किया और आपने मुझे मार डाला। क्या आपका यह काम विश्वासद्रोह नहीं? ऐसा करना क्या आपको शोभा देता है? यह तो सरासर अन्याय है।" तब शिव ने उसे शांत करते हुए कहा, "गजासुर, शिव भक्ति के उदाहरण के रूप में सदा तुम्हारा नाम अमर रहेगा। हाथी का सिर मेरे सान्निध्य में रहेगा। गज चर्म पहनूँगा।" यों कहते हुए शिव ने गजासुर को अपने में मिला लिया और उसे मुक्ति दी।

शिव ने भूमि को रथ, सूर्य, चंद्र को चक्र, वेदों को अश्व, ब्रह्मा को सारथी, मेरु पर्वत को धनुष, विष्णु को बाण बनाकर अपने अनुचर नंदी, शृँगी, भृँगी आदि प्रमथ गणों को साथ लेकर भयंकर त्रिपुरासुरों से युद्ध करने निकल पड़े। उनके पीछे-पीछे तीन करोड़ देवता भी अपने-अपने आयुधों के साथ आने लगे।

घर में अकेली बैठी पार्वती ऊब गयी थी। यह मालूम नहीं हो पा रहा था कि शिव कब लौटेंगे। ऐसे समय पर नारद वहाँ आये और कहने लगे, "पुत्री पार्वती, जब से शिव ने तुमसे विवाह किया तब से तारकासुर भय के मारे थरथर काँप रहा है। वह बुरे सपने देख रहा है। वह किसी भी क्षण तुम्हें हानि पहुँचा सकता है। वज्रदंत भी उसके साथ है। वह बड़ा मायावी है। अतः तुम्हें बहुत जागरुक रहना होगा।" उन्हें यों सावधान किया और चले गये।

पार्वती अब और चिंतित हो गयी। वे अपने आप पर नाराज़ होने लगी। उसे लगा कि इस नाराज़गी को दूर करने के लिए स्नान करूँ तो अच्छा होगा।

पार्वती ने उबटन लगाया और बचे-खुचे उबटन से एक गुड़िया बनायी। उसे प्यार से थोड़ी देर तक देखती रही और उसे नीचे रखकर इधर-उधर देखने लगी तो इस बीच वहाँ उस गुड़िये की जगह पर एक प्यारे बालक को पाया। पार्वती ने पूछा, ''कौन हो तुम?''

''तुम्हारी कांति से उत्पन्न उबटन का पिंड हूँ माँ। तुम्हारा पुत्र हूँ। पुत्र गणपति।''

पार्वती ने बालक को अपने हाथों में लिया, उसे चूमा और उसके हाथ में एक अंकुश थमाते हुए कहा, ''पुत्र, किसी कीड़े को भी अंदर मत आने देना।'' फिर उसे सिंहद्वार पर रखवाली के लिए बिठा दिया।

''माँ, भूख लगी है। खाने के लिए कुछ दो न।'' बालक ने पूछा।

तब उसी समय पार्वती ने आटे से पकवान बनाये और उसे देकर स्नान करने चली गयी।

तारकासुर ने सोचा कि पार्वती का अंत कर दूँगा तो शिव के पुत्र होने की कोई संभावना नहीं है। उसका प्राण सुरक्षित रहेगा। तब कोई भी उसे हानि नहीं पहुँचा सकता। उसने पार्वती के अपहरण का काम वज्रदंत को सौंपा। वज्रदंत बज्रायुध को भी अपने दाँतों से काटने की क्षमता रखनेवाला भयंकर राक्षस था। उसने एक बार पर्वतों को खोखला कर दिया, उन्हें पीस डाला और मूषिकासुर के नाम से सुप्रसिद्ध हुआ। पार्वती का अपहरण करने के लिए उसने पहले गजकर्णि, गोकर्णि नामक अपने दो राक्षस अनुचरों को भेजा।

वे सांड की तरह बलिष्ठ बालकों के रूप में वहाँ गये। तब उन्होंने वहाँ देखा एक पहरेदार बालक को, जो हाथ में अंकुश लिये सतर्क होकर इधर-उधर देख रहा था कि कहीं कोई यहाँ आ तो नहीं रहा है। उस बालक से दोनों ने कहा, ''आओ, तीनों मिलकर खेलें।''

बालक ने उन्हें ग़ौर से देखा और कहा, ''पहले कुछ खा लो।'' कहते हुए उसने उनपर पकवान फेंके। उनके सिर चक्कर खाने लगे और वे वहाँ से जब भागने लगे तो बालक ने उनपर आटे से बनाये पिंड फेंके। वे बड़े पत्थर बनकर उनके सामने गिरे। वे उनसे टकरा गये और ज़मीन पर गिर गये। तब पुत्र गणपति ने उन्हें संबोधित करते हुए कहा, ''कान पकड़ो, तीन-तीन बार उठक-बैठक लगाओ और अपने गालों को पीटते हुए यहाँ से भाग जाओ।'' उन्होंने उसकी आज्ञा का पालन किया और दौड़ते हुए वहाँ से चले गये।

राक्षस रूप में प्रकट होकर उन्होंने वहाँ जो हुआ, वज्रदंत से सविस्तार बताया।

वज्रदंत ने हुंकार भरी और चूहे के रूप में सिंहद्वार के पास गया। द्वार के पास एक छेद बनाया और अंदर घुसने ही वाला था कि पुत्र गणपति ने कटिसूत्र को फंदा बनाकर उस पर फेंका और चूहे को पकड़ लिया। फंदा गले में फंस गया और वह चूहा किकियाने लगा। उसने उसकी पूँछ पकड़ ली और उसे घुमाता हुआ दूर फेंक दिया।

पुत्र गणपति के उस झटके से मूषिकासुर अपने राज्य के अंतःपुर के सामने धड़ाम से जा गिरा। उसकी पत्नी धवला देवी की उच्च कोटि की भक्त थी। उसका सुहाग शाश्वत हो, इसका उसने देवी से वरदान पाया था। धवला ने त्रस्त पति को ढाढ़स बंधाया और प्राप्त वरदान के बारे में उससे कहते हुए पूछा कि इस दुर्घटना का कारण क्या है। विषय जानकर उसने अपने पति को सावधान किया कि आगे से कभी भी पार्वती को हानि पहुँचाने का व्यर्थ प्रयत्न न करे।

त्रिपुरासुरों का संहार करने के बाद पार्वती को देखने के लिए उत्सुक शिव जल्दी-जल्दी जब अंदर जाने लगे तो बालक ने उन्हें रोका। शिव ने चकित होकर पूछा, "तुम कौन हो?"

बालक ने खिलखिलाकर हँसते हुए कहा, "माँ का पुत्र हूँ। मायावी और वेषधारी घूम-फिर रहे हैं। मेरी माँ ने मुझे पहरेदार बनाकर यहाँ बिठाया। उनकी आज्ञा है कि कीड़ा भी अंदर प्रवेश न करे।"

"मैं ईश्वर हूँ, भगवान हूँ," शिव ने कहा।

"मुझे किसी भी भगवान से कुछ भी लेना-देना नहीं है। माता प्रकृति स्वरूपिणी है। प्रकृति की आज्ञा का पालन करना जीवों के लिए सबसे बड़ा धर्म है। इस धर्म से बढ़कर कोई और धर्म नहीं है। माँ की आज्ञा का पालन करना ही मेरा कर्तव्य है।" बालक ने दृढ़ स्वर में कहा।

त्रिपुरासुरों के संहारक शिव की वीरगाथाओं की स्तुति करते हुए जयजय ध्वनियों के साथ प्रमथगण व देवता वहाँ आ पहुँचे। शिव और बालक के बीच में होते हुए संघर्ष को सुनकर वे आश्चर्य में डूब गये। प्रतिमाओं की तरह खड़े होकर वे उन दोनों के संवाद सुनने लगे।

"छोकरे हो, अज्ञानी हो, इसीलिए कह रहे हो कि कोई भगवान नहीं है। सबका मूल परब्रह्म है। वही भगवान है।" शिव ने कहा।

"तुम बड़े हो, फिर भी लगता है, तुम्हारा ज्ञान अधूरा है। आदि शक्ति से विश्व और त्रिमूर्ति निकले हैं। यह संक्षेप में तुम्हें बताता हूँ। सुनो।" बालक ने कहा। फिर वह आदिशक्ति के बारे में यों कहने लगा।
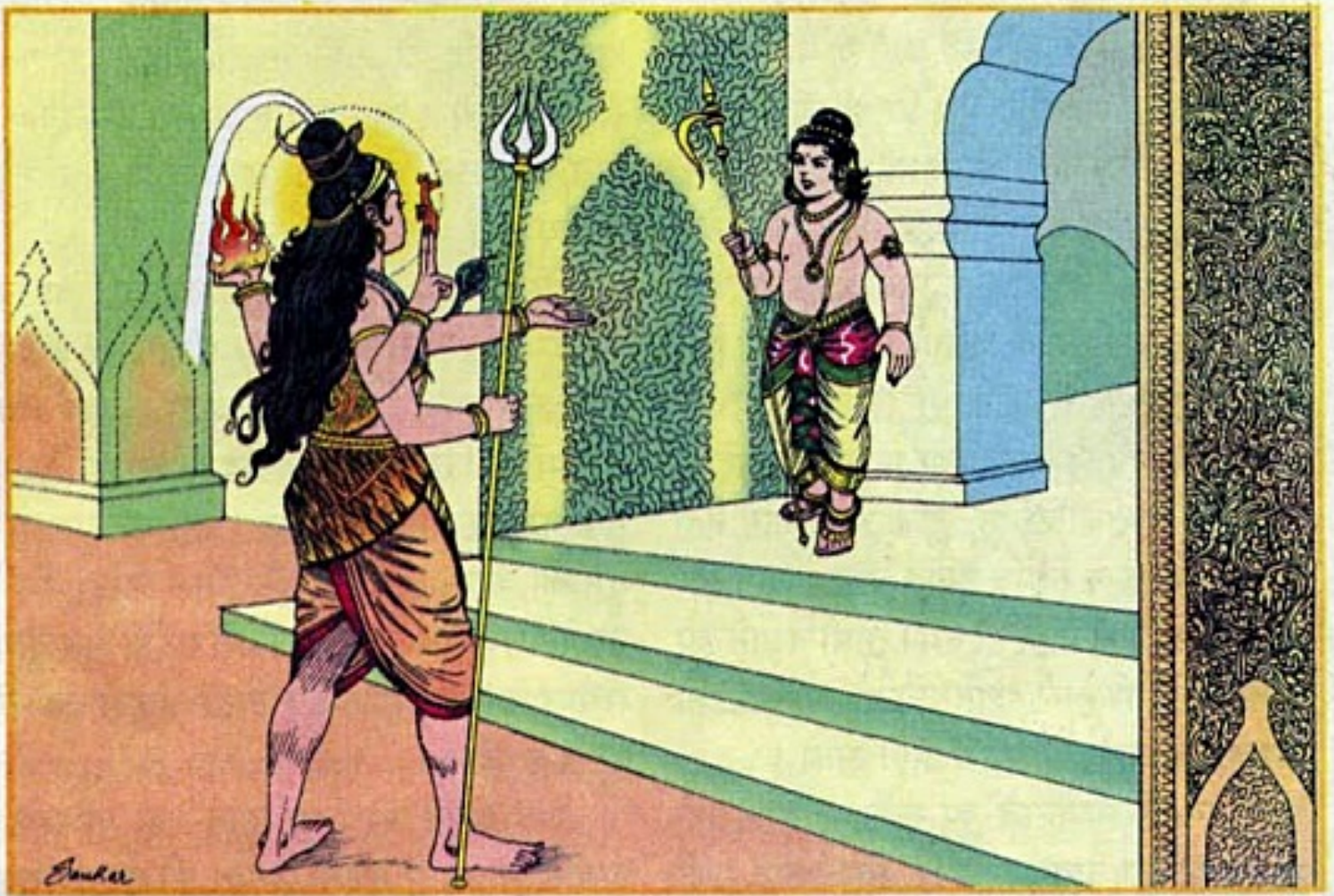
''आदिशक्ति ने रूप धारण किया। अपने शरीर को जब उसने झटका दिया तब लाल, नील व श्वेत रंगों से निकली तेजस्विता से ब्रह्मा, विष्णु, महेश जन्मे। ब्रह्मा, विष्णु दोनों ने देवी का कहा नहीं माना और उसे धिक्कारा। तब उसने तीसरी आँख खोली और उन्हें भस्म कर दिया। महेश्वर चतुर है। कहा मानता है, पर उसने देवी से कहा कि वह अपनी तीसरी आँख उसे दे दे। देवी ने अपनी तीसरी आँख निकाली और उसके माथे पर चिपका दी। उसने फ़ौरन वह तीसरी आँख खोली और देवी को भस्म कर दिया। जब वह जल रही थी तब अग्निकण बिखर गये और तेजोमंडल स्थापित हुए। भस्म सब जगहों में फैल गया। इससे विश्व बना। जिस देवी को जला हुआ समझा गया, वह यथारूप में पुनः प्रकट हुई। इसलिए उसे महामाया कहते हैं। महेश्वर की उसने प्रशंसा की और उसे सृष्टि का लयकार नियुक्त किया। ब्रह्मा, विष्णु को भस्म से निकाला और उन्हें जीवित किया। जो भस्म शेष रह गया था, उसे तीन भागों में उनमें बाँटा और लोक-पालन का आदेश देकर अंतर्धान हो गयी।''

''तुम्हारी बतायी कहानी सरासर झूठी और मन-गढ़ंत है।'' शिव ने कहा। ''अगर मेरी बतायी कहानी मन-गढ़ंत है तो ब्रह्म के बारे में तुमने जो कहा, वह सब कुछ शुष्क वेदांत है। यह कहना निराधार व त्रुटिपूर्ण है कि भगवान ने ही सबको जन्म दिया। यह कहना सच और संगत है कि सब कुछ देवी से ही निकला है। क्या यही सच नहीं लगता?'' बालक ने पूछा।

उसकी बातें सुनकर सबके चेहरे फीके पड़

गये। बालक को देखकर विष्णु प्रसन्न लगते दिखायी पड़े। वे मुस्कुरा पड़े। मन ही मन ब्रह्मा ने बालक के तर्क की भूरि-भूरि प्रशंसा की। स्त्रियों के मुखड़ों पर प्रसन्नता छायी हुई थी।

शिव का मुख क्रोध से लाल हो गया। उन्होंने कहा, ''देखने में एक छोटे-से बालक हो, पर बातें बड़ी-बड़ी करते हो। भयभीत मत होना। मैं तुम्हारा कोई अहित नहीं करूँगा। लेकिन चुपचाप द्वार से हट जाओ।'' कटु स्वर में उन्होंने कहा।

''जब तक जीवित हूँ, तुम्हें अंदर जाने नहीं दूँगा।'' बालक ने निर्भय होकर कहा।

शिव आपे से बाहर हो गये। ताली बजाते हुए उन्होंने प्रमथगणों को इशारा किया। बालक को खींचकर ले जाने के लिए वे आगे आये।

बालक ने मुस्कुराते हुए कहा, ''अपने को समर्थ होने का दावा करते हो और अपने गणों को मुझपर बल प्रयोग करने का आदेश देते हो। ऐसा करना क्या तुम्हें शोभा देता है? ठीक है, मैं भी गणाधिपति ही हूँ।''

यह कहते हुए उसने अपने अंकुशदंड को भूमि पर दे मारा। लगता था मानों माता भूमि ने पुत्र गणपति की ही तरह की रूपरेखावाले लाखों को जन्म दिया जिन्होंने नंदिनी शृंगिनी, भृंगिनी, चंद्रेश्वर आदि को अपने अंकुशों, गदाओं व शूलों से मार भगाया। शिव के शेष अनुचर दुम दबाकर भाग गये। तब जाकर पुत्र गणपति के सभी गण अदृश्य हुए।

शिव ने उग्र होकर त्रिशूल उठाया। बालक ने अंकुशदंड से त्रिशूल के वार को रोका। बालक ने खिलखिलाकर हँसते हुए कहा, ''जब तक मेरी माँ का दिया हुआ यह दंड मेरे हाथ में है तब तक कोई मेरा बाल भी बांका नहीं कर सकता। तुम जो करना चाहते हो, निर्विघ्न करो। मैं भी उसके लिए सन्नद्ध हूँ। फिर मेरी माँ ही सब कुछ संभाल लेगी।'' कहते हुए उसने अंकुश दंड को दूर फेंक दिया।

शिव अपने क्रोध पर काबू नहीं पा सके। उन्होंने आवेश में आकर उन्मत्त की तरह बालक को निशाना बनाकर त्रिशूल फेंका।

दूसरे ही क्षण बालक ''माँ'' कहकर आर्तनाद करने लगा। और उसका सिर धड से अलग हो गया और आकाश की ओर उड़ा। वह विपुल ज्योति के रूप में प्रकाशित होता हुआ अंतरिक्ष में लीन हो गया।

मेहनत का फल मीठा

बहुत पहले की बात है। एक छोटा-सा गाँव था। उसमें एक परिश्रमी किसान रहा करता था। उसका परिवार काफ़ी बड़ा था। उसके माता-पिता, पत्नी, उसके चार बच्चे व एक लंगड़ा-लूला छोटा भाई उसके परिवार के सदस्य थे। उनमें से सबके सब मेहनत करते थे। किसान भी अपने परिवार के सदस्यों को काम करने के लिए प्रोत्साहन देता रहता था। वह हमेशा कहा करता था कि मेहनत का फल मीठा होता है।

उसके खेत से सटकर आम का एक वृक्ष था। दोपहर को उसी की साया में बैठकर वह खाना खाता था। घर के शुभ अवसरों पर आम के पत्तों के तोरण बांधता था और घर को सजाता था। ऋतुकाल में परिवार के सभी सदस्य उसके फलों का मज़ा चखते थे। यों वह वृक्ष उसके लिए कितना ही उपयोगी सिद्ध हुआ।

आम के वृक्ष पर एक वनदेवी रहा करती थी। वह वहाँ लंबे अर्से से थी। फसल से किसान को थोड़ा-बहुत जो लाभ पहुँचता था, उससे उसके परिवार की स्थिति सुधरती जा रही थी, फिर भी किसान कड़ी मेहनत करता था। वनदेवी से यह सब देखती आ रही थी।

एक दिन वनदेवी खेत में काम पर लगे परिवार के सदस्यों को ध्यान से देखती रही और सोचने लगी, ''गरीबी की हालत में तो सभी कड़ी मेहनत करते हैं। परंतु इस किसान की हालत सुधर जाने पर भी वह आराम करने का नाम नहीं ले रहा है। सुख भोगने की ओर इसकी दृष्टि ही नहीं जा रही है। कहीं इसमें और कमाने की इच्छा जोर पकड तो नहीं रही है?''

समय बीतते-बीतते मेहनत की कमाई से बगल का एक एकड़ खेत किसान ने खरीद लिया। वनदेवी को पहले से इसका अंदेशा था।

पहली वर्षा के प्रारंभ होते ही शुभ दिन पर

- प्रदीप चौहान -

किसान अपने नये खेत में हल चलाने लगा। किसान की इस मेहनत को देखकर वनदेवी के हृदय में उसके प्रति दया उमड़ आयी।

उस दिन शामको जब वह घर जा रहा था तो वनदेवी प्रत्यक्ष हुई और अपना परिचय दिया। फिर उससे कहा, ''सालों से मैं देखती आ रही हूँ कि तुम कड़ी मेहनत कर रहे हो। बारिश व धूप की परवाह किये बिना अपने काम किये जा रहे हो। तुम्हारे कष्टों को देखते हुए तुझपर मुझे दया आ रही है। देखो, तुम्हें जितना धन चाहिए, मैं दे दूँगी। खुद इतना कष्ट झेलना छोड़ दो और मज़दूरों से ये काम करवा लिया करो।''

किसान ने वनदेवी को प्रणाम किया और पूछा, ''मेरे कष्ट जब तुमसे देखे नहीं जा रहे हैं तो मज़दूरों के कष्ट कैसे देख पाओगी? वे भी तो मेरी ही तरह मानव हैं। है न?''

देवी उसके इस सवाल पर नाराज़ नहीं हुई। उसने कहा, ''वे सबके सब अपना पेट भरने के लिए मेहनत करते हैं। उन्हें मेहनत करनी पड़ती है। परंतु मेरा संदेह है कि तुम कष्टों में ही सुख देखते हुए जी रहे हो। इसी कारण मैं तुम्हें पसंद करती हूँ। बोलो, कितना धन चाहिए?''

किसान ने एक और बार देवी को नमस्कार करते हुए कहा, ''चूँकि मैं कष्ट उठाता हूँ, कड़ी मेहनत करता हूँ, इसीलिए तुम मुझे पसंद करती हो। धन देकर उस पसंदगी से क्या मुझे दूर रखोगी? नहीं, तुम्हारी पसंदगी ही मेरे लिए अपार धन के समान है। मुझे धन नहीं चाहिए।'' यह कहकर वह वहाँ से चला गया।

दो दिनों के बाद जब वह खेत में हल चला रहा था, तब हल की कुसी से किसी वस्तु के टकरा जाने की आवाज़ आयी। उसने खोदकर देखा तो वहां उसे पीतल का एक घड़ा दिखायी पड़ा। उसमें चाँदी और सोने की अशर्फियाँ भरी पड़ी थीं।

उसने वह घड़ा अपने कंधे पर रख लिया और आम के वृक्ष के पास आया। उसने वनदेवी को संबोधित करते हुए कहा, ''माते, देवी।'' दो-तीन बार वह ज़ोर से चिल्लाता रहा।

दूसरे ही क्षण देवी प्रत्यक्ष हुई और पूछा, ''तुमने मुझे बुलाया? कहो, क्या बात है?''

वनदेवी को संबोधित करते हुए कहा, "देख लिया न। तुम्हारे आदेशानुसार खेत में काम करने मे लिए मज़दूरों को ले आया हूँ और उन्हें काम पर लगा दिया। अब तुम प्रसन्न हो न?"

"मैं और प्रसन्न? भला क्योंकर प्रसन्न रहूँगी। तुम तो एक क्षण के लिए भी नहीं बैठे। फिर मज़दूरों को लाने का क्या लाभ?" देवी ने पूछा।

"तुमने सही सवाल किया। आज मेरे खेत में जो काम पर आये, वे अव्वल दर्जे के सुस्त हैं, कामचोर हैं। इसीलिए उन्हें कोई काम नहीं देता। पास रहकर, साथ रहकर मैंने उनसे काम कराया। तुमने जो धन दिया, उसी में से मैंने उन्हें उचित मज़दूरी दी। अब कहो, तुम खुश हो न?" हँसते हुए उसने पूछा।

तब वनदेवी ने कहा, "तुम्हारी बातें सुनने के बाद अवश्य संतृप्त हुई। यह जानकर आनंद हुआ कि देवताओं में मुझ जैसे जड़स्वरूप और मनुष्यों में तुम जैसे देवता भी होते हैं। तुम ऐसे ही रहो और अच्छे काम ऐसे ही करते रहो। जितना धन तुम्हें चाहिए, मैं तुम्हें देती रहूँगी।

देवी की ये बातें सुनते ही किसान ने हाथ जोड़कर विनती की, "माते, ऐसा न करो। मुफ़्त में मिलनेवाला धन, अनायास ही प्राप्त होनेवाला धन पाप से भरा होता है। नया खेत मैंने जो खरीदा, अगर उसमें अच्छी फ़सल हो जाए तो मज़दूरों का पारिश्रामिक मैं खुद अपनी कमाई से दूँगा। तब मैं और मज़दूर और मेहनत करेंगे। और फिर नया खेत खरीदूँगा। बस, इस वृक्ष पर बैठी रहकर मुझे आशीर्वाद देती रहना। इससे अधिक मुझे और कुछ नहीं चाहिए।"

देवी उसकी बातें ध्यान से सुनती रही और उसके मुख पर व्याप्त आत्मविश्वास व स्वाभिमान को देखकर फूली न समायी।

"ठीक है। कष्टे फलि। जो मेहनत करता है, उसे ही इहलोक और परलोक के सुख मिलते हैं।" अपने आप कहती हुई और किसान को आशीर्वाद देती हुई वह अदृश्य हो गयी।

बजरंग का साहस

बजरंग बलरामपुर का निवासी था। वह उस दिन आपे में नहीं था। क्रोध के कारण उसका चेहरा तमतमा रहा था। उसने एक तलवार निकाली और सान पर धार तेज़ करने लगा। पिछले दिन उसके और वीरबाहु के बीच खेत को लेकर तीव्र रूप से वाद-विवाद हुआ था। असल में बात छोटी-सी थी। पर देखते-देखते इस वाद-विवाद ने झगड़े का रूप ले लिया। उस समय बजरंग ने तैश में आकर कहा, ''अरे ओ वीरबाहु, मैंने तुम्हारे पेट में तलवार नहीं चुभोयी और तुम्हें मार नहीं डाला तो मेरा नाम बजरंग नहीं। जानते नहीं, मैं इस परगने में मशहूर भीम का वंशज हूँ।'' यों प्रतिज्ञा करके वह घर लौटा।

बजरंग तलवार की धार तेज़ करता जा रहा था और साथ ही साथ वीरबाहु को गालियाँ देता जा रहा था। यह बात गाँव भर में फैल गयी। कुछ लोग उसके घर के सामने इस दृश्य को देखने इकट्ठे हो गये। गाँव के दो-तीन बड़ों ने बजरंग से कहा, ''तुम दोनों के खेत अगल-बग़ल में हैं। दोनों को एक-दूसरे की मदद की ज़रूरत पड़ती है। दोनों के बीच में नाहक यह दुश्मनी क्यों? अपना क्रोध निगल जाओ।''

पर बजरंग ने उनकी बातें अनसुनी कर दीं और तलवार लिये वीरबाहु के घर की ओर निकला। बच्चे यह तमाशा देखने उसके पीछे-पीछे जाने लगे। जब वह वीरबाहु के घर के सामने गया तब मालूम हुआ कि वह घर पर नहीं है, खेत पर है। बजरंग ने ज़ोर से तलवार हिलायी और उसे गाली देता हुआ खेत की ओर बढ़ा। तब तक गाँव के कुछ लोग वहाँ जमा हो गये।

वीरबाहु खेत के बांध पर बैठा दाँत साफ़ कर रहा था। उसने तलवार लिये उसी की तरफ़ बढ़ते हुए बजरंग को देखा। पर वह थोड़ा भी न हिला न डुला। भय उसे छू तक नहीं गया। एक बार उसे उसने देखा और फिर मुड़कर अपने काम में लग गया।

- समीर मिश्रा -

बजरंग लंबे लंबे डग भरता हुआ, तलवार को हवा में झुलाता हुआ वीरबाहु के निकट आया और ऊँचे स्वर में चिल्लाने लगा, ''अरे, लगता है, तुमने अब तक मुझे ग़ौर से नहीं देखा। मेरे हाथ में जो तलवार है, उसे ग़ौर से देखो। थोड़ी देर पहले ही इसकी धार तेज़ की। यह तलवार तुम्हारे पेट में भोंक दूँगा, तुम्हारे शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा।'' कहते हुए उसने तलवार ऊपर उठायी।

लोगों ने समझा कि बजरंग डींग हाँक नहीं रहा है, बल्कि सचमुच ही उसे मार डालनेवाला है। उन्होंने उसे पकड़ लिया और दूर ले गये।

इतना सबकुछ होते हुए भी वीरबाहु जैसा था, वैसा ही बैठा रहा। इसका उस पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा। उसने बजरंग को मुड़कर भी नहीं देखा। श्याम नामक एक व्यक्ति वीरबाहु के पास आकर बोला, ''तुम यह क्या कर रहे हो? एक तरफ बजरंग लंबी तलवार लिये तुम्हें मार डालने आया है और तुम चुप बैठे हो! मानों कुछ होनेवाला ही नहीं है। मुड़कर उसे देखा तक नहीं। वाह, तुम्हारी हिम्मत की दाद देनी होगी।''

इस बीच बजरंग लोगों से अपने को छुड़ाने की कोशिश करते हुए कहने लगा, ''मुझे छोड़ो। वीरबाहु की ज़िन्दगी का यह आख़िरी दिन है। उसे टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा।''

लोगों से अपने को छुड़ाने की कोशिश में लगे हुए बजरंग को दिखाते हुए वीरबाहु ने श्याम से कहा, ''श्याम, अब तुम्हें एक दृश्य दिखाने जा रहा हूँ। तुम वहाँ जाओ और जिन्होंने उसे पकड़

रखा है, उनसे धीरे से कहो कि वे उसे छोड़ दें।''

श्याम की समझ में नहीं आया कि वीरबाहु बजरंग को क्यों छुड़ाने के लिए कह रहा है। वह तो ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा है, गालियाँ दे रहा है, मारने की धमकी दे रहा है और हवा में तलवार घुमा रहा है। क्या वीरबाहु को अपनी जान की परवाह नहीं? यह धैर्य भी कैसा धैर्य है! यों सोचते हुए वह लोगों की तरफ़ बढ़ा, जिन्होंने बजरंग को पकड़ रखा था। वह यह जानने के लिए भी उत्सुक था कि देखें क्या होता है। लोगों में से एक को उसने चुपके से बुलाया और उससे कहा, ''बजरंग को छोड़ दो।''

बस, दूसरे ही क्षण लोगों ने बजरंग को अपनी पकड़ से मुक्त कर दिया। अकस्मात् हुई इस घटना से बजरंग औंधे मुँह गिर गया। वीरबाहु को तलवार दिखाते हुए फूँक-फूँककर क़दम रखते हुए वह उसकी ओर बढ़ा।

परंतु इस बार उसे मालूम हो गया कि उसे रोकने के लिए कोई आनेवाला नहीं है तो जहाँ खड़ा था, वहीं खड़ा रह गया और वीरबाहु को संबोधित करते हुए कहा, ''अरे वीरबाहु, तुम्हारी ज़िन्दगी के चंद दिन और बाक़ी हैं, इसलिए तुम बच गये। मैं नहीं चाहता कि इतने लोगों के सामने तुम्हें मार डालूँ और जेल जाऊँ या फाँसी हो जाए। यह बेवकूफ़ी मैं नहीं करूँगा। आज नहीं, किसी और दिन तुम्हें देख लूँगा। उस दिन तुझे कोई बचा नहीं सकता। मेरे हाथों में ही तुम्हारी मौत लिखी हुई है।'' यह कहता हुआ वह तुरंत पलट गया और वहाँ से चला गया।

उसके चले जाने के बाद वीरबाहु ने वहाँ उपस्थित लोगों से कहा, ''आप लोगों ने देख लिया न, आपने जैसे ही उसे छोड़ दिया, कैसे दुम दबाकर चलता बना। वह जानता था कि आप लोग उसे ऐसा करने से अवश्य ही रोकेंगे। केवल तलवार दिखाकर मुझे डराने की उसने कोशिश की। मारने के लिए आनेवाला आदमी भला क्योंकर अपने साथ लोगों की भीड़ लायेगा? भूंकनेवाले कुत्ते नहीं काटते। काटनेवाले कुत्ते भूँकते नहीं। ठीक कहा न मैंने! यह कहावत इसके बारे में कितनी सही है।''

उसकी बातों से लोगों की भी समझ में आया कि वीरबाहु के धैर्य का क्या कारण है।

मेरे पिता टाँड पर नहीं हैं

दक्षिण समुद्री तट पर कश्यप नामक एक छोटा व्यापारी रहा करता था। उसकी एक पत्नी थी, साथ ही तीन साल का बेटा भी। वह बालक बड़ा ही मीठा बोलता था और देखने में भी बड़ा सुंदर था, इसलिए कश्यप अपने बेटे को बहुत चाहता था। घर में आये दोस्तों व रिश्तेदारों के सामने वह उसे ले आता और उससे बोलने के लिए कहता। उसकी बोली सुनने के लिए उन्हें विवश भी करता था। अपने बेटे को मीठे ढंग से बोलते देखकर उसे अपार हर्ष होता था।

कश्यप कपास और उसके बीजों को खरीदता था और अधिक दाम मिलने पर उन्हें बेचता था। अभी-अभी उसे एक व्यापारी मित्र से मालूम हुआ कि बगल के शहर में कपास बहुत बड़ी मात्रा में मिल रही है और सस्ती भी है। उसके पास इतनी बड़ी रक़म नहीं थी कि वह अधिकाधिक कपास खरीद सके। इसलिए वह एक महाजन के पास कर्ज़ माँगने गया। तीन महीनों के अंदर लौटाने का वादा करके वह पाँच सौ रुपयों का कर्ज ले आया। इस रक़म से उसने कपास खरीदी। ''मैं यह कपास अब बेचने नहीं जा रहा हूँ। दाम जब बढ़ जायेगा तब इसे बेचूँगा और खूब लाभ कमाऊँगा। फिर इसके बाद देखना। हम कितने खुशहाल होंगे !'' उसने अपनी पत्नी से यो डींग हांकी।

दूसरे ही दिन वह शहर गया और एक बड़ा गोदाम किराये पर लिया। उसने उस कपास को गोदाम में सुरक्षित रखा।

एक महीना गुज़र गया। आकाश में बादल छाये हुए थे। बूँदाबांदी होने लगी और हवा धीरे-

- सुमित्रा भट्ट -

करोगे, पर इतना तो सच है कि सूदखोर अपने लठैतों के साथ तीन दिन बाद हमारे घर आनेवाला है।''

कश्यप ने कहीं और भाग जाने का उपाय सोचा। किन्तु उसे डर था कि महाजन के आदमी अवश्य ही इस घर पर नज़र रखते होंगे। सबेरे-सबेरे वे लोग उसके घर आ ही गये और दरवाज़ा खटखटाया। उसे मालूम था कि रक़म न लौटाने पर वे कुछ भी करने में संकोच नहीं करेंगे। शायद उसे खूब मारें और पीटें भी। कश्यप को लगा कि अब वह जाल में फँस गया है और बचना मुश्किल है। उसने और कोई उपाय न पाकर अपनी पत्नी से कहा, ''मैं टाँड पर चढ़कर छिप जाऊँगा। आये बदमाशों को किसी तरह भेज दो !'' कहते हुए वह जल्दी-जल्दी टाँड में छिप गया।

कश्यप का बेटा यह सब कुछ आँखें फाड़-फाड़कर देख रहा था। सूदखोर के भेजे आदमियों की सहनशक्ति हद पार कर गयी। वे दरवाज़ा ज़ोर-ज़ोर से खटखटाने लगे। कश्यप की पत्नी ने दरवाज़ा खोला और बाहर झांकते हुए कहा, ''कौन लोग हो तुम? क्यों दरवाज़ा इतने ज़ोर-ज़ोर से खटखटा रहे हो?''

''पूछ रही हो हमसे, हम कौन हैं? अपने पति को बुलाओ। वही बतायेगा।'' एक लठैत ने व्यंग्य-भरे स्वर में कहा।

''वे घर में नहीं हैं। मेरी बात का एतबार नहीं कर रहे हो तो अंदर आकर खुद देख लो'' कश्यप की पत्नी ने धीमी आवाज़ में कहा।

महाजन सहित उसके सभी आदमी अंदर आये और कश्यप को ढूँढ़ने लगे। कश्यप का बेटा भी उनके साथ-साथ था। उन्हें कश्यप कहीं दिखायी नहीं पड़ा। कश्यप के बेटे को लगा कि वे और उसके पिता आँख मिचौनी का खेल खेल रहे हैं तो उसने पिता की मदद करने के उद्देश्य से अचानक कह दिया, ''मेरे पिताजी टाँड पर नहीं है !''

महाजन ने टाँड की ओर एक बार देखा और हँस पड़ा। हँसते-हँसते उसने उस नादान बच्चे की गाल पर हाथ फेरा। फिर उसने कश्यप की पत्नी से कहा, ''पहले अपने पति को नीचे उतरने को कहो। उससे कहो कि रक़म लौटाने के लिए उसे एक और महीने की मोहलत दे रहा हूँ।'' कहते हुए वह घर के बाहर आ गया। उसके आदमी भी उसके साथ-साथ बाहर आ गये।

घर की चौखट पार करके जब महाजन और उसके आदमी गली में आ गये तो वह बालक हँसता हुआ कहने लगा, ''मेरे पिताजी टाँड पर नहीं है, मेरे पिताजी टाँड पर नहीं है।''

अपराजेय गरुड़

रवीन्द्रदेव आदित्य से पूछता है कि जब रक्षक उसे ढूँढने गये थे तब वह कहाँ था।

मैं अपने कक्ष में ही ध्यान कर रहा था। रक्षक मुझे ढूँढने क्यों गये थे?

मैं कहता हूँ कि तुम अपने कक्ष में नहीं थे। लेकिन बताओ, राजा कहाँ हैं?

मैंने आप से कहा है, मैं इसे गुप्त रखने की शपथ ले चुका हूँ। मैं राजा को धोखा नहीं दे सकता।

गुप्त रखने का? यह मूर्खता है। मैं जानता हूँ तुमने उन्हें अपने किसी परोक्ष उद्देश्य की पूर्ति के लिए छिपा रखा है। वे हमारे राजा हैं।

करोगे, पर इतना तो सच है कि सूदखोर अपने लठैतों के साथ तीन दिन बाद हमारे घर आनेवाला है।''

कश्यप ने कहीं और भाग जाने का उपाय सोचा। किन्तु उसे डर था कि महाजन के आदमी अवश्य ही इस घर पर नज़र रखते होंगे। सबेरे-सबेरे वे लोग उसके घर आ ही गये और दरवाज़ा खटखटाया। उसे मालूम था कि रक़म न लौटाने पर वे कुछ भी करने में संकोच नहीं करेंगे। शायद उसे खूब मारें और पीटें भी। कश्यप को लगा कि अब वह जाल में फँस गया है और बचना मुश्किल है। उसने और कोई उपाय न पाकर अपनी पत्नी से कहा, ''मैं टाँड पर चढ़कर छिप जाऊँगा। आये बदमाशों को किसी तरह भेज दो !'' कहते हुए वह जल्दी-जल्दी टाँड में छिप गया।

कश्यप का बेटा यह सब कुछ आँखें फाड़-फाड़कर देख रहा था। सूदखोर के भेजे आदमियों की सहनशक्ति हद पार कर गयी। वे दरवाज़ा ज़ोर-ज़ोर से खटखटाने लगे। कश्यप की पत्नी ने दरवाज़ा खोला और बाहर झांकते हुए कहा, ''कौन लोग हो तुम? क्यों दरवाज़ा इतने ज़ोर-ज़ोर से खटखटा रहे हो?''

''पूछ रही हो हमसे, हम कौन हैं? अपने पति को बुलाओ। वही बतायेगा।'' एक लठैत ने व्यंग्य-भरे स्वर में कहा।

''वे घर में नहीं हैं। मेरी बात का एतबार नहीं कर रहे हो तो अंदर आकर खुद देख लो'' कश्यप की पत्नी ने धीमी आवाज़ में कहा।

महाजन सहित उसके सभी आदमी अंदर आये और कश्यप को ढूँढ़ने लगे। कश्यप का बेटा भी उनके साथ-साथ था। उन्हें कश्यप कहीं दिखायी नहीं पड़ा। कश्यप के बेटे को लगा कि वे और उसके पिता आँख मिचौनी का खेल खेल रहे हैं तो उसने पिता की मदद करने के उद्देश्य से अचानक कह दिया, ''मेरे पिताजी टाँड पर नहीं है !''

महाजन ने टाँड की ओर एक बार देखा और हँस पड़ा। हँसते-हँसते उसने उस नादान बच्चे की गाल पर हाथ फेरा। फिर उसने कश्यप की पत्नी से कहा, ''पहले अपने पति को नीचे उतरने को कहो। उससे कहो कि रक़म लौटाने के लिए उसे एक और महीने की मोहलत दे रहा हूँ।'' कहते हुए वह घर के बाहर आ गया। उसके आदमी भी उसके साथ-साथ बाहर आ गये।

घर की चौखट पार करके जब महाजन और उसके आदमी गली में आ गये तो वह बालक हँसता हुआ कहने लगा, ''मेरे पिताजी टाँड पर नहीं है, मेरे पिताजी टाँड पर नहीं है।''

अपराजेय गरुड़

चित्र : पाणि

यह जानकर कि उनके राजा का अपहरण हो गया है, चन्द्रपुरी की प्रजा भौचक्की रह जाती है। सेनापति नरेन्द्रदेव राजा के विषय में अधिक जानकारी के लिए तांत्रिक नागबंधु से मिलने पहाड़ों पर चले जाते हैं। महल के रक्षक रवीन्द्रदेव के आदेश पर आदित्य के निवास पर जाते हैं।

रवीन्द्रदेव आदित्य से पूछता है कि जब रक्षक उसे ढूँढने गये थे तब वह कहाँ था।

रवीन्द्रदेव अपनी तलवार खींच लेता है और निहत्थे आदित्य को ललकारता है।
मैं तुम जैसे लोगों से निबटना जानता हूँ।
बिजली की तरह झपटकर आदित्य रक्षक के हाथ से बर्छा ले लेता है।
तलवार फेंक दो!
मुझे मारो मत आदित्य !
आदित्य रवीन्द्रदेव की तलवार उठा लेता है और रक्षकों को धमकाता है। वे भाग जाते हैं। आदित्य अंदर से दरवाजा बंद कर लेता है।

रवीन्द्रदेव स्तब्ध रह जाता है। उसे ऐसी कभी आशा नहीं थी। वह लाचार हो जाता है।
मेहरबानी करके मुझे छोड़ दो। तुम जो कहोगे, वही करूँगा।
ठीक है, मैं आज तुम्हें छोड़ दूँगा। लेकिन तुम्हारे दिन पूरे हो चुके हैं! अपने पित को कह दो कि राजा को हटाने तुम्हारे षड्यंत्र का पर्दाफाश किया जायेगा।
महल के रक्षकों को सावधान कर दिया जाता है। वे दरवाजे को तोड़कर खोलने का प्रयास करते हैं।
रवीन्द्रदेव का मुँह बंद करने और उ एक कुर्सी के साथ बाँधने के बाद...
आदित्य अचानक रक्षकों को अंदर आने के लिए दरवाजा खोलता है। तब वह दरवाजे को बाहर से बंदकर राजा से मिलने चला जाता है।

पहाड़ों से होकर दो दिनों तक यात्रा करने के बाद नरेन्द्रदेव और उसके आदमी एक प्राचीन मंदिर के भवन में पहुँचते हैं।

वे देखते हैं कि नागबंधु के भक्त नागपंचमी उत्सव के लिए अपनी भेंट लिये पंक्ति में खड़े हैं।

तांत्रिक का एक शिष्य अपरिचित आगन्तुकों के पास जाता है।
कृपया नीचे उतर जायें और पंक्ति में खड़े हो जायें। हमारे गुरु अनुशासन के विषय में कठोर हैं। उनके आदेश का पालन अवश्य होना चाहिए।
क्रमशः

Statement about Ownership of CHANDAMAMA (Hindi)
Rule 8 (FormVI), Newspaper (Central) Rules, 1956

1. Place of Publication	82 Defence Officers Colony Ekkatuthangal Chennai-600 097
2. Periodicity of Publication	MONTHLY 1st of each calendar month
3. Printer's Name Nationality Address	B. VISWANATHA REDDI INDIAN 82 Defence Officers Colony Ekkatuthangal Chennai-600 097
4. Publisher's Name Nationality Address	B. VISWANATHA REDDI INDIAN 82 Defence Officers Colony Ekkatuthangal Chennai-600 097
5. Editor's Name Nationality Address	B. VISWANATHA REDDI (Viswam) INDIAN 82 Defence Officers Colony Ekkatuthangal Chennai-600 097
6. Name and Address of individuals who own the paper	Chandamama India Ltd. Board of Directors: 1. P. Sudhir Rao 2. Vinod Sethi 3. B. Viswanatha Reddi 82 Defence Officers Colony Ekkatuthangal Chennai-600 097

I, **B. Viswanatha Reddi,** *do hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.*

1st March 2002

B. VISWANATHA REDDI
Publisher

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

**क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो,
जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?**

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

जनवरी अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

शिव भगत राम
हरिजन विद्यालय, सदर बाजार,
बैरकपुर, उत्तर २४ परगना - ७४३ १०१,
पश्चिम बंगाल.

विजयी प्रविष्टी

दुश्मन सरहद करे न पार।
हम प्यार, शांति के पहरेदार॥

चंदामामा वार्षिक शुल्क
भारत में १२०/- रुपये डाक द्वारा
Payment in favour of CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 600 026 on behalf of Chandamama India Limited. No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : Viswam

MARCH 2002
Regd. with RNI. No. 1087/57
Registered No. TN/Chief PMG-866/2001